3350

શ્રી રોહિણી આખ્યાન.

ઋષિ મહાત્મ્ય અને પાંડવોનું
હિમાળા ગમન.

સર્વે વૈષ્ણવોને માટે
અસલ સંસ્કૃત ઉપરથી પ્રાકૃત કરનાર
ભટ ગોવરધન સખારામ વસુંધારામ દેસના.

છપાવી પ્રસિદ્ધ કરનાર
બુકસેલર ત્રીલોચન રણછોડ ડાકોરના.

આવૃત્તિ પેહેલી.

અમદાવાદ મધ્યે
છગનલાલ મગનલાલે પોતાના શિલાપ્રેસમાં
છાપ્યું. ઠેકાણું [illegible] ગોપપુરામાં
સાલ મજકુરમાં. સં. ૧૯૪૪
સને ૧૮૮૮
કિંમત રૂ ૧-૦-૦

प्रस्तावना.

स्वर्ग रोहिणी ए नामनुं पुस्तक महान ऋषी श्री व्यास मुनीनुं संस्कृतमां महाभारथना पर्व १८ ना भाग तरीके रचेलुं छे, तेनुं गूजरातीमां आगणना कोई कवीए दोहरा चोपाई तथा रागना प्रमाण वगर तथा असल पुस्तकनो पूर्ण भावार्थ मेळव्या वगर रचेलुं हतुं, पण ते कोई जग्याए छपाईने प्रसिध्ध पामेलुं नहोतुं. तेथी आ पुस्तक रचावा मारो विचार थयो, अने गाम डाकोर निवासी. व्यास मूळजी खुशाले केटलाएक संस्कृत ग्रंथोनो भावार्थ लई संग्रह करी राखेलुं हतुं, ते तेमणे मने आप्युं. ते उपरथी आ नीति मार्गमां आर्य धर्मनुं पुस्तक में गाम जसुंदाना रहेवासी भट गोवरधन सदाराम पासे रचावी शुध्ध कर्युं छे.

आ पुस्तक वैष्णव भक्तोने तेमज कथा केहेनार व्यासजीओने घणुंज उपयोगी थई पडशे एम धारी मोटा अक्षरथी छपाव्युं छे. माटे सुज्ञ जनो पुस्तक खरीदवा उमंगथी प्रयास करशे एवी आशा छे.

आ संबंधी केटलाएक काममां गाम जसुंदाना वारीगोर ओगरिसास आपुजी, तथा भाई सल्लु मनसुखराम भट्ट एओए मने केटलीएक मदद करी छे तेथी हुं तेमनो आभारी छुं.

संवत् १९४४ माहा शुदी १५ }
मुकाम डाकोर. {

पुस्तकसार श्री लोचन रणछोड डाकोरवाळा
प्रसिध्धकर्त्ता.

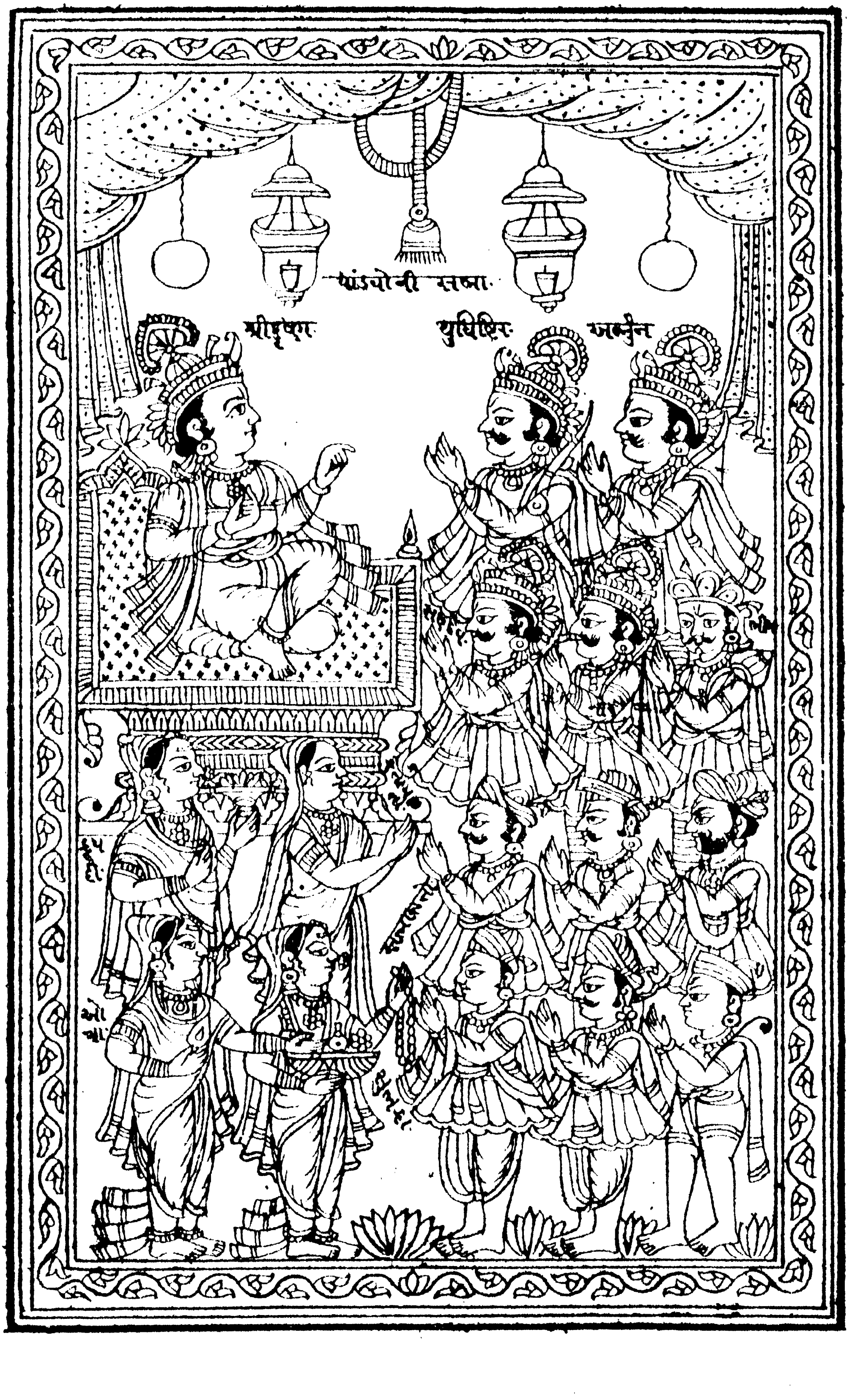
अर्पणपत्रिका.

प्राणथी अधिक प्यारा मीत्र. भाईशंकर पुरुषोत्तम, तथा श्रीछगनलाल आत्माराम तथा कपडवणजवारी पंड्या भोगीलाल विश्वनाथ विगेरे मित्र मंडळ.—

तमारो मारा उपर अत्यंत प्रेम छे, तथा मने हरेक काममां सहायता करो छो तो तमारी मारा प्रत्ये प्रेमनी पूर्णतानी यादगीरीमां आ पुस्तक हुं आपने अर्पण करूं छुं.

लसुंद्रा संवत १९४४ माहाशुदी ११

ली. तमारो मित्र.
गोवरधन सखाराम भट्ट.
लसुंद्रा, रामक्षेत्र.


पांडवोनी सभा
श्रीकृष्ण
युधिष्ठिर
अर्जुन

स्वर्गारोहिणी.

अध्याय. १

श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथस्वर्गारोहिणी
आख्यान लिख्यते॥ ॥रागरामग्री॥ ॥
प्रथम पुजुं श्रीगणपति पायजे॥ जेथी सकल
मनोरथ थायजे॥वक्रोदर अने ऊजवल दंतजे
॥ सुंडो गवरीनो पुत्र गुणवंतजे॥१॥ ॥ढाल
॥ ॥गवरीना पुत्र श्री गणपति, तमो ध
रजो मुजपर मेहेर॥ शंभुसुतने सेवतां, सदा
थाये लीला लेहेर॥१॥ चतुर्भुज ने गज वदन छे,
सिंदुर अंगे साहत॥ लक्ष लाल कुमार छे संगे,
सुधबुध नारीनो कंथ॥२॥ कमणडल करमां फरसी
शोभे, अंगे सज्या शणगार॥ श्रेष्ट जडनथी
अमृत झरतुं, एवा ब्रह्म कुमार॥३॥ विधि तन-
या सरस्वति, मुखे वेदवाणी विलास॥ गोवर
धन कुंदास तारो, वंदुं सारदा मात॥४॥ वैशंपा
ये जेणीपेरे जोड्या, सुण जनमेजयराय॥ कहुं
कथा तुजपिता तणी, स्वर्गारोहिणी महीमाय
॥५॥ कौरव पांडवने युध्ध हवुं, माहाकुरुक्षेत्र मोझा
र॥ अढार दिवस संग्राम चाल्यो, योध्ध हणाया
अपार॥६॥ भीष्मपिता मह द्रोणगुरु वली, कर्ण

ने अश्वस्थामा ॥ कृपाचार्यने सल्य सरिखा, सु
या शकुनी मामा ॥ ८ ॥ एरीते त्यां अगीयार सो
णी, सैन्यनो थयो संहार ॥ पांडवना पण योध्धा
मराया, अपरमपार अपार ॥ ९ ॥ एरीते पी-
त्रीने मारी, राज्य पांडवे लीधुं ॥ युधीष्टरे सिंहा
सन बेठी, छत्र विहारण कीधुं ॥ १० ॥ पण मनमां
परितापज पाम्या, पीत्री सरवेने मारी ॥ तुच्छ
राज्य माटे कीधुं कुडुं, कुलने नाख्युं संहारी ॥ ११ ॥
एम सोच करे मन मोटो लागी, प्रभु आव्या पा
स ॥ कहे कृष्ण तमे शा कारणथी ॥ थया उदा-
श ॥ १२ ॥ हाथ जोडी हरी सामे बोल्या ॥ कुंताजी-
ना तंन ॥ कुटुंब कुणक कीधो में तेथी, अकुलाय छे मु
ज मंन ॥ १३ ॥ प्राश्चित जेहुं माथे मोटुं, तेथी दीलडुं
दाझे ॥ सत बंधु में हाथे हणाव्या, तुच्छ राजने का-
जे ॥ १४ ॥ द्रोणगुरु अश्वस्थामा आदी, ब्रह्म हत्या-
ओ में लीधी ॥ बार वरस वनमां वरीया पण, त्रं
ते कुबुध्धि कीधी ॥ १५ ॥ स्वामी शोचना थाय छे म
नमां, सगानो करी संहार ॥ असत्य कीधुं अज-
जेला में, पडुं नर्क मोझार ॥ १६ ॥ श्री प्रभु कहे तमे
सांभळो मारी, कुंता सुत एक वात ॥ प्राश्चित सं
वे थाय लभ्यजे, यज्ञ करो साक्षात ॥ १७ ॥ पंचरं-
गी घोडाने छोडो, भूपर फरवा काज ॥ देश जीती

दुनीआना सर्वे, आवशे ते हयराज ॥२८॥ यज्ञ
महीं तोखारने होमी, देव जणिहान आपो ॥श्री
पति कहे तेम करवा थकी सौ, जणशे तमारां पा
पोषण ॥ वायक सांभळी शाम धणिआनां, छो-
ड्यो यज्ञ तोखार ॥२९॥ कारण मोकल्या साथे
पारथ पांडुकुमार ॥३०॥ सर्व देशमां फरीने आ-
व्यो, अश्व यज्ञनो जेह ॥ युधिष्टिरे अश्वने पोते,
कुंडमां होम्यो तेह ॥३१॥ यज्ञ पुरण कीधो छे पांडवे,
अश्वमेध जेनुं नाम ॥ हस्तिनापुरनुं राज्य क-
रे जेने, सहाय छे पुरण काम ॥३२॥ अश्वमेध
पुरण करीने, प्रभु थया तैयार ॥ द्वारामतिमां ज
वा माटे, कृष्ण निकल्या बहार ॥३३॥ वळाववा ये-
ल्या विठलने, कुंताजीना तन ॥ आंसु चाल्यां
आंख्यथकी, भगवान जतां लोचन ॥३४॥ अ-
र्जुन प्रत्ये बोल्या स्वामि, चालो अमारी साथ
॥ तेडी गया पारथने पोते, द्वारामतिमां नाथ ॥
३५॥ ॥वलण॥ ॥हिन्नो नाथिने अर्जु-
न बेउ, द्वारामतिमां जायरे ॥ गोवरधन कहे ते
पछी, कथा केपी कहेवायरे ॥३६॥ ॥इतिश्री
माहाभारते पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे
पांडवो अश्वमेध पारथ द्वारका प्रवेशो संक्षेप
वर्णो नाम प्रथमो अध्यायः॥१॥ ॥

अध्याय ॥ २ जो ॥ ॥ राग मारु ॥

॥ ॥ वैशंपाये कहे भारताय ॥ तमो सांभळो
जन्मेजय राया ॥ आव्या द्वारामतिमां द्याळ म सा
पे आव्याछे कुंताबाळ ॥ १ ॥ एम गया दीवस बहु
वही ॥ प्रगटयो वीच्यार प्रभुने तहीं ॥ भूमी भारभे
जो छोडीधो ॥ मारी असुरने कढ दीधो ॥ २ ॥ पण
कोटि छप्पन जादव जेह ॥ रह्या अवनीनी उपर तेह
॥ मारे देवो ते सर्वने मार ॥ करवो कृष्णना कुळनो
संहार ॥ ३ ॥ जे रहे जादव जगमां जेह ॥ पीडे प्रज-
ने सघळा तेह ॥ माटे कारज कारमुं करवुं ॥ कुळ कृष्णनुं
सघळुं संहरवुं ॥ ४ ॥ पछी जवुं वैकुंठमां मारे ॥ जेथी
भूमी भरे नहीं ज्यारे ॥ कीधो वीठले विच्यार त्यांय ॥
पेठा जादवना जीव मांह्य ॥ ५ ॥ मति फेरवी हरी-
ए तेनी ॥ थई बुध्धि मलीन ते जादवनी ॥ शांब
कुंवर जादवनुं नाम ॥ कीधुं कपट नुं एक काम ॥ ६ ॥
वेष वनितानो तेणे लीधो ॥ जुठो गर्भने धारण
कीधो ॥ मळ्या बे च्यार जादवटोळे ॥ बोले मश्कु-
रीना बहु बोले ॥ ७ ॥ मन चिंतव्यां कारज करे ॥
जनमी अहंकारी थईने फरे ॥ एक दिवस ते जन
सर्वे ॥ गया वनमां आणी मन गर्वे ॥ ८ ॥ रेहेता
मुनी ते वननी मोझार ॥ नाम दुर्वासा छे निर-
धार ॥ करता तपस्या तेस्थानक ज्यारी ॥ आव्या

बलदेवने बुडी नारी ॥ला करी कपट मुनी पाये लाग
ग्या ॥ मुजे आसीरवचन जकु मांग्या ॥ ऋषी होड
जमो जे दीधी ॥ मारे वात जतावजे सीधी ॥१०
॥ छे आ सुंदरी मारी सारा ॥ थाशे कुंवरी के कुमार
॥ बेडी हाथे कुं बलदेव बसुं ॥ स्वामी शीघ्र जतावो
सासुं ॥११॥ ध्यान मुनीजे तपस्यामां धार्युं ॥ करी
समाधी ज्ञान विचार्युं ॥ दीधी बलदेवे मश्करी बेहा॥
समजाया तपसीने मनमां तेह ॥१२॥ क्रोध ज्ञान
नी ऊपर आव्यो ॥ रूप बुंकुं ते नारीनुं लाव्यो ॥
बोल्या ऋषीजी करीने रीस ॥ कोपी लमर थपडाव्यां
छे रीरीश ॥१३॥ पेट पत्निने जेवुं अवतरशे ॥ ज
दवकुळनो संहार करशे ॥ कोटि छप्पन जादव जेह ॥
करे क्षय ते क्षणमां तेह ॥१४॥ सुणी चमक्या ते ज
दव जेह ॥ दीधो ऋषीजे शाप रेंगुं क्रोध ॥ सर्व वात
सभामां कही ॥ दीधी कन्या कपटनी सही ॥१५॥ श्री
पतिने आगमती छे वात ॥ लोह मुशळ अवतर्युं
साक्षात ॥ करी चुरण नाख्युं सागर मांह्य ॥ व्याप्युं
मुशळ तणां तुं त्यांय ॥१६॥ नायुं प्रभास पाटण
मोझार ॥ थई पान तेनी नीरधार ॥ गया जादव
जात्राने काज ॥ छप्पन कोटि सहित महाराज ॥१७
॥ सर्वे कीधुं मदिरानुं पान ॥ भूल्या जणीआ जे
तननुं भान ॥ कीधुं साम सामे महा क्रोध ॥ जदवा

लाग्यात्यां अद्दव अंधा॥४॥ कोई पुत्र पिताने मारे॥कोई पिता पुत्र संहारे॥ जेम लडी मुवा अ सर्व॥प्राणीमनमां ते अधिको गर्व॥४॥ पछी श्रीपति अेकला रह्या॥धीर अर्जुन पासे गया॥कह्यो विधिलेसर्व वृतांत॥ ताई अबुं कुं थईने शांत॥वैकुंठमां कईशुं अमो॥ वीर वचन सांभळजो तमो॥२०॥कुंहेजे धर्मने मारा जुहार॥कुंताने केहेजे नमस्कार॥ प्रभु वैकुंठ जता जाणी॥ आव्यां अर्जुनने आंखे पाणी॥२१॥ प्रभु तम वियोगे रहेवाशे॥मारा हरीवीण दीन केम जशे॥ आपी धीरज प्रभुजे त्यांय॥ मोकल्या समजावी पुरमांय॥२२॥

॥ चलण॥

॥मोकल्या हस्तीनापुरमां॥ अर्जुनने निरधारजे॥ पदवार्या पोते प्राणजीवन॥ वैकुंठमां कीरतारजे॥२३॥ ॥ इतिश्री माहाभारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे अद्दवा स्थळी संक्षेप वर्णो नाम द्वितियो अध्यायः॥२॥

॥ अध्याय॥ त्रीजो॥

॥ ॥राग धनाश्री॥

॥ आव्या अर्जुन पोते सारजो॥ हस्तिनापुरमां नीरधारजो॥१॥ कुंता मातने लाग्या पायजो॥ नम्या कईने धर्मरायजो॥२॥ मुखे करमायुं देख्युं ज्यारेजो॥ पूछ्युं माताअे पुत्रने त्यारेजो॥३॥ ताई केम थयो तुं

ऊहरी जो ॥ केम कुशळ छे अविनाशी जो ॥४॥ वारी॥
डारणथी आंखे आंसु खेरे जो ॥ केम आक्रंद आ
वडुं करे जो ॥५॥ स्वामुं बोल तुं मारा तन जो ॥ त्यारे
बोल्या त्यां अर्जुन वचन जो ॥६॥ माता वात कहुं
कहुं सार जो ॥ गया मुकीने जुगदाधार जो ॥७॥
सुणी माता जे रुपी आं घणं जो ॥ तणे प्राण नथी
पाम्यां मरण जो ॥८॥ युधिष्टर पण महाशोक करे जो
॥ नरणे नीर ज्योधारां खेरे जो ॥९॥ भीम निकुपरी
कहेव सार जो ॥ करे आक्रंद रूप कुमार जो ॥१०॥ वासु
लमाने जोता नेह जो ॥ घणुं रुदन करे छे तेह जो ॥११
॥ शोक सागर ऊलट्यो सही जो ॥ घणुं रुदन करे सन
कु तही जो ॥१२॥ मुर्छा कुंता मातनी वळी जो ॥ दुःख
ह धरे दुखणी जो ॥१३॥ बोल्यां माता जे भत्तुनी
साथ जो ॥ तमो साम्भळो मुज नाथ जो ॥१४॥ केम
मुकी गया हरी तमे जो ॥ कोने आधारे रहीए अमे-
जो ॥१५॥ तमो दिन बंधु छो दयाळ जो ॥ सकुलकुल त
णा प्रतिपाळ जो ॥१६॥ नही रहेवाय तम विण ना
थ जो ॥ माटे ऊपाडी ल्यो ग्रही हाथ जो ॥१७॥ दुःख
वीयोग केम वेठाशे जो ॥ मारी पण अेक लुग समी
लशे जो ॥१८॥ अेम रुदन आंसु ढरे जो ॥ कुंता आंखे
आंसुडां लरे जो ॥१९॥ रोतां माताने लेयां ल्यारे जो
॥ सरव रडवा लाग्यां त्यारे जो ॥ २०॥ भीम अर्जुन

रोहेध सारजी ॥ करे रुदन अपरमपारजी ॥ री ॥
हस्तीना पुरना सहु लोकजी ॥ हरी भक्तां कर्यो अहु
रो शोकजी ॥२२॥ धर्मराये तज्युं आसंनजी ॥ भणे
दयाकुंवर मुन तंनजी ॥२३॥ ॥ चलण ॥
॥ ॥ दयाकुंवर निज तन भणे ॥ हवो आत्म
ज्ञानरे ॥ गोवरधन कहे ते समे ॥ आव्या वैकुंठथी
भगवानरे ॥२४॥ ॥ इति श्री माहात्मार
थे पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे पांडव हरी
वियोगकुंता उद्धारो वर्णो नाम तृतियोअध्यायः
॥३॥ ॥ अध्यायः चोथो ॥ ॥
राग सामेरी ॥ ॥ रुदन करता भक्तनेभ
णी, प्रभु पधार्या त्यांय ॥ दीनबंधुने भेपाअ
वता, हरख्याते मन मांय ॥१॥ अधिपती ए त्यां
आसन आप्युं, स्वामिनुं सनमान कीधुं ॥ अ
र्घपादथी पुज्या पोते, चरण पखाळी पीधुं ॥२
॥ उठ्या युधिष्टर आसन छोडी, श्रीपतिने प-
धराव्या ॥ खबर सांभळी चारे वीरा, हरीनी
शरणे आव्या ॥३॥ आनंद वाध्यो अंगमांही,
कीधुं कृष्णनुं त्यां दर्शन ॥ सेवा करतां रोमणिया
नी, हरख्या सौके मंन ॥४॥ युधिष्टर कहे अज
बेला, करी मेहर पधार्या आज ॥ दर्शन कीधां धि
नपतिनां, सुधर्यां सर्वे काज ॥५॥ दुःख हणायां

हहुनां मार्यां, आव्या अंतरनमी ॥ तनधनमांमें तमने निरख्या, श्रीरुक्मणीना स्वामि ॥६॥ पण दुःख मोटुं छे मारे, सौ को मर्णां देखो ॥ प्रत्न दुःख पामे छे पापे, वचन विलोकीक कहेछे ॥७॥ गंधारीने धतराष्ट्र बर्ग, वनमां त्याग्या प्राण ॥ सत बंधु में मार्या मोहन, भूंडी मोटां जाण ॥८॥ दुर्योधनने कर्ण मार्यो, मोटा बंधु मारा ॥ दुष्यासन दुर्मुख दमन, दुरकृत्य आदि संहार्या ॥९॥ दुरकृष्णने दंत दुर्मुख, दंति दवन नेह ॥ देवकने वली देहोत्र विरा, दवस दोषक तेह ॥१०॥ दुयवी दांबुक दंतासुर, दुसपंथ दुह देलक्ष ॥ दली दंतकेश दल्सीपत्त, अने दीर्घतम दुरलक्ष ॥११॥ दलासुर दीगमुह दानेशर, दुरआकु देहराल ॥ दंत विर्य देवक देरीानी, देव दमन दमसाल ॥१२॥ देवकृतांत दीसुरने दारुण, दोदमन दीवबंद ॥ दल्सीबिंद दासाह दवनसेन, दीर्घमोड दल्लीलन्द ॥१३॥ दानेसरने दल्लदंती, दल्लीपत्त दुरकेश ॥ देव दारुकने दवनासर, देव दोह अने दुरवेश ॥१४॥ जे आदि रात बंधुने में, कुरुक्षेत्रमां मार्या ॥ मामा शकुनी शल्य वली, गुरु द्रोण समा संहार्या ॥१५॥ भीष्म पितामह कृपाचार्यने, अश्वत्थामा सार ॥ कुलनुं छेदन कीधुं माटे, पडुं नर्क मोझार ॥१६॥ तुच्छ राज्यने माटे मोहन, कीधुं पाप

अपाराा विप्रतणी हत्या में कीधी, करीरा देहनो
त्याग ॥४७॥ नथी राज्य लोगववुं मारे, नथी सु
खमां रेहेवुं ॥ त्याग करुं आ तृणवत् हुनीआं,
प्राण तमारा सेवुं ॥४८॥ तव बोल्या श्रीकृष्णप्र
लु, तमो सांलळो मारी वात ॥ मुनकुंदीआमां
वशीयुं खेवुं, कहुं तमने साक्षात ॥४९॥ राज्य नही
थाये हवे तमथी, कहुं छुं साचुं वीर ॥ आव्यो कणि
युग अवनी ऊपर, सांलळजो रणधीर ॥५०॥
॥ ॥वलण॥ ॥सांलळजो रण
धीर वीर ॥ नहीं थाये तमथी राजरे ॥ गोवर्ध
न कहे युधिष्टरने, कहे छे श्री महाराजरे ॥५१॥
॥ ॥इतिश्री महाल्लारथे पांडव चरित्रे
स्वर्गारोहिणी पर्वे पांडवो शोक निवारण श्री कृ
ष्णो हस्तिनापूर प्रवेशो नाम चतुर्थो अध्यायः॥
४॥ ॥अध्याय पांचमो॥ ॥
राग मारु॥ ॥कहे वैशंपाय कथाय ॥ सां
लळ जन्मेजय राय ॥ युधिष्टरने श्रीकृष्ण कहे
छे ॥ पांच पांडव त्यां सांलळे छे ॥१॥ पापी कळियु
ग आवशे जेह ॥ धर्म भ्रष्ट करे सहु तेह ॥ सहु प्र
ज्ञ थाशे पापी ॥ नाखे वचन तमारुं ऊथापी ॥२॥
कोई धर्म वचन नहीं धारे ॥ घणुं पाप थशे आ जा
रे ॥ त्यारे धर्म बोल्या त्यां वचन ॥ तमो सांलळो

मधु सुदन ॥ ३॥ कह्यो कलियुग आव्यो केवो ॥ केम
जन्या आचरशे जेवो ॥ केवी पापी प्रजा मारी
थाशे ॥ धर्म रहित तेशी परे करशे ॥ ४॥ स्वामी क
लि आचरण जणावो ॥ सर्व घात मने संभळा
वो ॥ वळती बोल्या विश्वंभर वात ॥ महिमा क
लियुगनो साक्षात ॥ ५॥ चारे वर्णनुं कहुं छुं चरि
त्र ॥ सर्वे सांभळो धर्म पवित्र ॥ विप्र कलियुगना
केटला ॥ धर्म हीण थाशे तेटला ॥ ६॥ नहीं अभ्या
स वेदनो करे ॥ भीख मागवा फरता फरे ॥ आशा पार
की राखशे जेह ॥ करे शौद्रनी सेवा तेह ॥ ७॥ संध्या
स्नान करे नहीं सार ॥ दुष्ट बुध्धि थाशे निरधार ॥ छळ
पाखंड करशे पापी ॥ धर्म रीतने नाखे उथापी ॥ ८॥
वेद शास्त्रना सरखा गणशे ॥ करी कपट पर धन हणशे
॥ कोई वेदने व्यसनी थाशे ॥ कोई शौद्रनुं अन्न ज खा
शे ॥ ९॥ आभडछेटनो करशे संग ॥ प्रभु नामनो था
शे भंग ॥ कन्या वेचीने धन कुलशे ॥ विप्र नीचने
दान ज देशे ॥ १०॥ शौद्रने घेर विप्र ज रहेशे ॥ स्वज
नने ते शत्रु गणशे ॥ गाळ्या विण तेल ज वापर
शे ॥ कोई पान मदिरानुं करशे ॥ ११॥ वेदशास्त्रने हीं
गण ॥ मात तात हणशे पोतानां जाण ॥ नीच चाक
री विप्र ज करे ॥ परनारीनी पुंठ ज फरे ॥ १२॥ इष्टदेवने
मानशे नहीं ॥ पूजे पीरने दुष्ट जे सही ॥ शौद्रने घ

र भमया भरी ॥ प्रथम दीअने पीरसीने खारो ॥
२३॥ असत्य अन्या आचरशे सर्व ॥ मन आणशे
अछो गर्व ॥ विप्र थईने कृषी करशे ॥ छानी पांपण
ते जोणवशे ॥२४॥ पेट माटे तेपर देशे भरीशे ॥ अ
वा कणिना ब्राह्मण थाशे ॥ हवे स्त्रीनां कुछुं कर्म
॥ तमो सांभळो राजधर्मी ॥२५॥ स्त्री थईने पाण-
शे गाय ॥ पुंठज मलेच्छ मुकाया भय ॥ देशे स्त्री ब्रा-
ह्मणने मारा ॥ करशे गौ तणो संहारा ॥२६॥ नही माने
ते देवीके देव ॥ विप्रपासे करावे सेव ॥ सामासामी
लडाई जोडशे ॥ पुन्य पापथी ते नव डरशे ॥२७॥ देशे कु
पात्रने ते दान ॥ मुके विसारी श्री भगवान ॥ देशे
पतिओने अकुंछा ॥ आपे पारकी स्त्रिने सुखा ॥
२८॥ सासरवासणीने छुटी लेशे ॥ संत साधुने कु
भत देशे ॥ सुतां परभणे छानां गामां लेशे रं-
डीने विप्रना दाम ॥२९॥ वैर ब्राह्मण उपर राखे
॥ मुखे भुंडां वचन अकु लाखे ॥ ब्रह्म पाळशे नही
स्त्रीतन ॥ सेवा ताकशे पारका धन ॥३०॥ पीरशे क
क महिराके ताडी ॥ मूके पुरथी सुपात्र काडी ॥ रांडु
सरखा ते विप्र भगणशे ॥ कुरी चोरीने पेट भर
शे ॥३१॥ बुध्य सांभळी नारी भरी ॥ जेवा कणि
ना स्त्री थाशे ॥ नही आयुष्य राखशे पासा ॥ पेट
माटे थाशे कोना दास ॥३२॥ ॥ वलण ॥

॥ ॥६॥ सचारी परतणा॥ पापी नाम प्रपंडरे ॥ ७॥ गोवरधन कहे हिननो॥ हेरी जहहो हंडरा॥ ८॥
॥ ॥ इति श्री माहात्मारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे श्री कृष्ण कृणि महात्म्य वर्णोनाम पंचमो अध्यायः॥ ५॥ ॥ अध्याय छट्ठो॥
॥ ॥ राग आसावरी॥ ॥ वैशंपायन वाणी बोल्या, सुण जन्मेजय राय॥ जनजे लो कहे युधिष्टरने, कृणि तणो महिमाय॥ १॥ ब्राह्मणने स्त्रीकरां में, संतलणाव्यां जाणे॥ येरीतणां सांतणने वढाना, वणती शोक वाणे॥ २॥ करे नातरां जे अन वसरवे, पापी श्रीहालजन॥ धर्म ध्यान नव धारे पोते, करे अन्याय धन॥ ३॥ चेर राखरी विप्रनी साथे, संतनेहरी मार॥ थापण जोणघरी हीन जननी, करे छ वसंहार॥ ४॥ दान आपेलां पाछां लेरी, जोछुं तोलेतोल॥ द्रोह करे नीज मात पिताने, न पाणे पीतु बोल॥ ५॥ निंदा करशी गुरु तणी, लगनीने मुकछांडी॥ सासुने घर सोंपे पोते, आपे सालीने सांडी॥ ६॥ छापां तिलक तूणशीनी माळा, लुठां धारशी जेह॥ वैर राखे जंघुनी साथे, जुगजा मरे तेह॥ ७॥ गणि मधुनो वणन करीने, दीनने ते छेतरशी॥ ८॥ ब्रह्मने मुकीने, पाखंडनी पूजा करशी॥ ९॥ इष्ट देवने दीवो न करे, पीर मणी हाजरी॥ वैरा पुत्र व्यसनी

नीवडशे, गुणका संगे जशे ॥१॥ जू घरनी भक्ति
भूलीने, अन्य नियनुं भरशे ॥ हवाणां काढे धन
दापी, नर जुगटे रमशे ॥२०॥ विप्रतणुं धन ह-
रे पापी, व्याज वधारे लेशे ॥ भीक्षा नव आपे ब्रा-
ह्मणने, गाळ अतिशे देशे ॥२१॥ भगनीने भा-
णेजनी उपर, वधारशे बहु वेर ॥ संत हरीजन वि-
प्रनी साथे, करशे आजु केर ॥२२॥ हरिकथा पर हेत-
न राखे, भांड भवैया जेशे ॥ पुन्य कामे पैसो नव
खरचे, खोटामां धन खोशे ॥२३॥ अलजेले युधि-
ष्टरने कही, वैशा तणी सहु वात ॥ शौन्क तणी कुं
सांभळजे, युधिष्टर मारा भ्रात ॥२४॥ तुळसी-
नी माळा करधारी, हरीनी निंदा करशे ॥ पापे पग-
लां भरशे पापी, मांस मदिरा भखशे ॥२५॥ करे
आचरण कुडां सरवे, खट दरशनथी दूर ॥ ईटि
वाडा जाणे अहंकारी, पापकरमामां पूरा ॥२६॥
विप्र तणां स्थानक छीनावी, पोते धाम त्यां कर-
शे ॥ दान आपेलां पाछां लेशे, पापे पगलां भर-
शे ॥२७॥ गुरु तणुं अपमान करे, मोटानुं मान
न राखे ॥ रीअवचा नारी रझळशे, भामनी भूंडुं
भाखे ॥२८॥ पाखंडीनी पूजा करशे, नमे दुष्टने
पाया ॥ ब्राह्मणने भीखारी करशे ॥ कपिलणो म-
हिमाय ॥२९॥ ॥धलण॥ ॥महीम

जे हणियुगनो ॥ मोहन कहेता मूळरे ॥ त्रष्ट था
शे भूमी सहु ॥ धारी नेतां धूळरे ॥ २७ ॥ ॥
ईतिश्री माहाभारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारो-
हिणी पर्वे श्री कृष्ण कळि महात्म्य वर्णो नाम
षष्टमो अध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ अध्याय ७
मो ॥ ॥ राग माढ़ ॥ ॥ वैशंपायन कहे सु
णराय ॥ स्वर्गारोहिणीनो महिमाय ॥ मोहन
मर्म कळिनो कहे छे ॥ युधिष्टर सामे त्यां सांभळेछे
॥ वर्णवे चारे तणी सहु वात ॥ कही रहीये रायनी सा
थ ॥ त्यारे बोल्या युधिष्टर वाणी ॥ तमो सांभळो
सारंगपाणी ॥ १ ॥ दुष्ट कळियुग हशे दुःख ॥ मारे
नथी लोग वयुं अ ॥ सुख ॥ प्रभु चरणतमारामां
राखो ॥ नही संभाय दुष्टनो साखो ॥ ३ ॥ त्यारे
श्री प्रभु वदिया वात ॥ सुणो पांडुना पुत्र साक्षा
त ॥ नही रहेवाय तमथी हवे ॥ २ ॥ अन्य पापी कळि
नुं थवे ॥ ३ ॥ पापी प्रजा थाशे पृथ्विनी ॥ हिंगर-
वीष्ट थाशे तेनी ॥ ४ ॥ अल्प दूध हशे दुरघाय ॥ र-
सकस सहु भूमीना जया ॥ नाशे कुप सरोवर सु-
काई ॥ मारे जनने पोतानो भाई ॥ ५ ॥ मेघवृष्टि
करे नही वारी ॥ अन्न नीपजे अल्प सुधारी ॥ मा
तपिताने परहरे पुत्र ॥ सोंपे सासुने नीज घर
सुत्र ॥ ६ ॥ नारी नरनुं कह्युं न धारे ॥ २ मे अवर ज-

गतमां धधारे ॥ देरी मांहे दवानळ लागे ॥ धणि
तिर्थनो महिमा लागे ॥ ८ ॥ देरो भ्रमने पतिङ
॥ थाशे प्रधान जांची आणंद ॥ कृपिना विप्र जेती
करशे ॥ कुडी कुपर पेरधन हरशे ॥ जा जल्प आयु:
ष्य थाशे सर्व ॥ तोय मनथी न मुके गर्व ॥ आर थ
पनी विनता जेह ॥ गर्भ धारे व्यभिचारी तेह ॥ १०
॥ कोई ध्यान धर्म नही धारे ॥ जींय नीच पशे जेउ
जारे ॥ साधु संतनी सेवा न करे ॥ जुगलन स
हु जगमां फरे ॥ ११ ॥ जेरी पंडील पुराणी जेव्या
सा ॥ तेनो न धरे को विश्वास ॥ नीच नारीशुं ला
करे प्रीत ॥ राजे रामानी साथे रीत ॥ १२ ॥ देशी पति
पीयुने केर ॥ राजे स्वजन साथे वेर ॥ पडशे दुनी-
यामां आजो दुकाण ॥ मारे माबाप पोतानां बा
ळ ॥ १३ ॥ जळ हीण थाशे सहु कूप ॥ ताहे रमवा
रामानुं रूप ॥ पुल्न पापी पाखंडनी करशे ॥ नीच मु-
खथी न्याय सांभळशे ॥ १४ ॥ पिता पुत्रीशुं रमशे
जरा ॥ न्यात जातनी ने अेक वेह धारा ॥ निंदा कर-
तां न डरशे कोई ॥ मन मोहीत जुवतीने जोई ॥ प
॥ परनारीनी पुंठण करशे ॥ अति कर्म अधर्मना कर
शे ॥ रमशे जाळ जुगटुं ने धूता ॥ जमे लांच लवे
आमां लूत ॥ १६ ॥ धन दाबी देवाणां करे ॥ लुगां
गरीबनां नाम मांडे ॥ सहु कष्ट नामनी ओथा

शे॥ नीचनी संगे निहणि ल्वरी ॥९७॥ ॥

चलण॥ ॥ निहणी ल्वरी नीच संगे॥ लाम नी मुडी ल्वरथार रे॥ गोवरधन कहे सांलणो॥ पंडुत णा कुमार रे॥९८॥ ॥ इति श्री माहात्मारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे श्रीकृष्णकृमि हात्म्य वरणोनाम सप्तमोऽध्यायः॥७॥ ॥

॥ अध्याय ८ मो॥ ॥ राग माड़नी देशी॥

॥ युधिष्टर कहे रे, जलजेला कणि आवो थरो॥ तो तो त्रीकमरे, दीवस कुंभना केम नरो॥१॥ घणु दीलडुं रे, सांलणी वात श्री रामनी॥ पां में वीरनेरे, प्रगटी ल्वाळा पावक तणी॥२॥ जो न्या धर्म त्यांरे, नाथने शीर नमावियुं॥ सुणी वातनेरे, आंख्योमां पाणी आवियुं॥३॥ हेक कुं पियोरे, मन परिताप पाम्या घणो॥ कह्युं कृष्ण नेरे, दाखवो महिमा कणि तणो॥४॥ प्रत्न पुन्य थीरे, पाळेछे आज्ञा रायनी॥ स्त्री वैश्य जेरे, र क्षा करे विप्र गायनी॥५॥ जेथी उपजे रे, प्रत्न पाप केम आदरे॥ नीच कामनां रे, पावक पेरे पेशव रे॥६॥ नथी मानतुं रे, कैयुं मारुं कह्युं आपनुं॥ ते थी लागयुं रे, पगलुं मुकेलुं पापनुं॥७॥ धर्म छोडीने रे, विप्र अधर्म आदरे॥ अवट कर्मनेरे, तजने कृरी कर्म करे॥८॥ संध्या स्नाननेरे, मुकीने लिक्षा मागशे

॥ तो तो ते तणुं रे, केम वचन सहु मानशो ॥ जावे
द निंदतां रे, केम पावक सणशे नहीं ॥ तपशे ॥ तज
रे, केम शोवा करे ते सही ॥ १० ॥ स्त्री पुत्र जे रे, छिन
गौनी वाहुरे च्यढे ॥ सत कर्मनेरे, तजने नर्के नहीं
पडे ॥ ११ ॥ वर्णी युध्धथीरे, नासे पुत्र लूमी तणो ॥
तो तो उजटे रे, उर्ध्वी आत्मा आपणो ॥ १२ ॥ रा
ज्य छोडीनेरे, राज्य कुंवर कायर थशे ॥ जावी मार
शेरे, मलेच्छ रीके रोलागशे ॥ १३ ॥ सत्य वातमां रे
वे षण य वांकु बोलशे ॥ तो तो न्यायनी रे, वातकशा
वाको नशे ॥ १४ ॥ करी कपटथीरे ॥ ओछुं तोळी नेछे
तरे ॥ अर्थी वेशनीरे, पवीत्र जाती ना करे ॥ १५ ॥ वि
प्र स्त्रीनीरे, शेवा करे नहीं शोद्रतो ॥ थाशे मोक्ष शुं
रे, अधर्मी पासे तजतो ॥ १६ ॥ करी असत्ये रे, कणि
कणाकण व्यापशे ॥ पण लोक जारे, असती आज
घा केम थशे ॥ १७ ॥ मन माकडुंरे, माने नहीं हेजी ल
न लक्ष ॥ तेथी त्रिकमरे, हाजयो तेवा हाजला ॥ १८
॥ तो तो सिध्ध जारे, बोल्युं हरी तमनुं थशे ॥ हा
जयो सहु रे, लेईने मन संशय नशे ॥ १९ ॥ पछी
बोलीआ रे, श्रीपति रायनी साथमां ॥ उठो
आसमेरे, काम हजु छे हाथमां ॥ २० ॥　　　　॥
वलण ॥　　　　॥ काम हजु छे हाथमां ॥ कहुं छुं
निरधार रे ॥ गोवरधन कहे हाजवुं ॥ पांडुं तणा कुमार

रोाशी॥ ॥इति श्री महाभारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे युधिष्टर शोक दर्शावनो नाम अष्टमो अध्यायः॥८॥ ॥अध्याय नमो॥ ॥राग आशावरी॥ ॥वैशंपा

ये वाणी वद्या तुं, सांभलजे राय॥ विस्तारीने कहुं छुं तुजने, स्वर्गारोहिणी महिमाय॥१॥ श्रीपति कहे तमवीर धारने, मोहलो थयोरे हीरा॥ तमो रहेजो मध्य स्थल, ए जोवनमां सर्व अधीरा॥२॥ आज्ञा लेईकुंता सुत चाल्या, माहावननी मोझार॥ मध्यस्थे युधीष्टर बेठा, चोंदीश चार कुमार॥३॥ पूर्व दीशामां पारथ चाल्या, संभल पूरछे शोकरा॥ धर्म विनय पुरुष पति तेनो, जन करेछे लोकरा॥४॥ आवीने बेयुं अर्जुने, वीथीत्र सरखी वात॥ त्याई उपर जुठुं लोकोमल मुकी, करवी देहनी घात॥५॥ राजा ए रत्नी ए दीधो, मानी जुठुं वचन॥ आयुं प्रायश्चीत लेईने मनमां, त्रास्या कुंता तन॥६॥ पश्चिम दिशा ए गया वृकोदर, महावननी मोझार॥ आव्यो भाग ए क उत्तम ते स्थल, वसे सीध्य ए क सार॥७॥ फरतां फरतां गया भिमसेन, उला रह्या ते ठाम॥ देख्यो नगरे प्रेतसहाभलो, पूरण पापनुं काम॥८॥ सिध्य तणी एक सुंदरी तेणे, पुत्री जणी विवेक॥ ते पुत्रीने सीध्ये लीधी, करुणा दीधा छेक॥९॥ वहेंची लीधा पी-

युपत्निये, पुत्री लागत नेह ॥ पांडुपुत्र पाछो वलियो
त्यां लेई जननि तेह ॥१०॥ हवे दक्षिण दिशामां
निकुण गया छे, आव्युं अंतरपुर गाम ॥ अेयुं रोके
रगलीने कुंची, माणस नहीं ते ठाम ॥११॥ अे गा
म जे अंतरपूर छे, अेता थाल्या त्यांय ॥ शल मेहेल
मां आव्या निकुण, मानव लेषा त्यांय ॥१२॥ तप
दीठो अेक हींडोळापर, काग हींचतो सार ॥ होणे वा
यु नांखे हींडोळा, हंसपक्षी नीरधार ॥१३॥ अेटलुं
लेईने निकुण त्यांथी, परघर्या पाछे पंथ ॥ उत्तर दि
शामां सहदेव गया, त्यां शुं निपन्युं संत ॥१४॥ अ
घोर वनमां सहदेव आव्या, महा भयानक वन
॥ जातां दीसे अेक सरस शोभितो, त्यां गया कुंता-
तन ॥१५॥ तरुवर भार अढार दिसे छे, फल फूलनो
नहीं पार ॥ मेवा मीष्ट रह्या छे पाकी ॥ ते वननी मो-
झार ॥१६॥ विचार कीधो सेहदेव जा, फल उत्तम-
छे अेह ॥ लेई जाउं कमळापति माटे, अेम करीने ते
ह ॥१७॥ अेम कहीने फल तोड्यां त्यां, गांसडी बां
धी अेक ॥ लईने सहदेव पंथे पडीया, मनमां राखी
टेक ॥१८॥ गांसडीमां ते फल बांध्यां छे, थया तेह-
ना प्राण ॥ स्वान मंजार मुअेक वनचर वली, व्या-
घ्र वरू अजगर जाण ॥१९॥ लेई चरित्रने सहदेव मन-
मां, विस्मय पाम्या अपार ॥ आ शुं कारण फल

णाविया, अवअजरेऊभीरतारा॥२०॥ युधिष्टरने मध्ये
जोता, करीने जेकगमा॥ तेस्थानकदश कुपहता,
त्यांथियुंजेवुंकामा॥२१॥ जेक कुपथी जण ऊलराई,
आठकुप छलकाया॥ ते नवकुपनुं पाणी पडेपण, जेक
कुप न लराया॥२२॥ ते जोयुं युधिष्टरे सहु, पाव्या
हरिनीपासा॥ व्यारेथीरव्यारेहिरीथी, आव्याथई
ऊदासा॥२३॥ सर्व वृत्तांत कह्यो केशवने, कपितणो
महिमाया॥ सांलणी दुष्टकपिनुं कारज, गलराया
त्यांराया॥२४॥ स्वामि मनमो संदेह लाग्यो हवे
रहुं नथलजया॥ नथीकरवुं राज्यपुरनुं॥ आवीरीवैकुं
ठमांया॥२५॥ तमे कह्युंते साच्युंथयुं छे, कपिहणाह
जआव्यो॥ वीरतणो मुख वात सांलची, लय घणो
दुःखायो॥२६॥ अर्जुनने लेई लुठतणी, जेकपरिक्षा
निरधार॥ लिमसेनने लेईआणक, हत्याजेगीनीज
पार॥२७॥ नीकुळे नीघा ऊंचानी, सेवा देखीजेहा॥
सहदेवकपरतणी गत देखी वनमां तेहा॥२८॥ भें
जेक स्थान जोरी, जोयुं लूमिनुं वृत्तांत॥ थईआन
त्रीमनमांमुजने, लागी सरवे भ्रांत॥२९॥ माटे
राज्य नथीकरवुंहवे, राज्यहणाहजपाना॥ आज
गमां रेहेवाय नहीं, शरणेराखो लगवाना॥३०॥ अव
धुं तमारी सोबतमांकुं, वैकुंठनी मोझार॥ कपितणा
समयमां रहेवुं नथीहवे फिरतारा॥३१॥ पात वजो ल्यव

श्रीकृष्ण सुणो, तमो पांडुना कुमार॥ कहवे आवीछुं वैकुंठमां कही, कपि ताणो ने सार॥ कपि आयथी राज्य तजीने, आयवा ईच्छा होय॥ कहुंछुं तम ने हिमगीरिपर, आवजो वीरा सोय॥७॥ हीम गीरी शीखरना ऊपर, छे वैकुंठनुं धाम॥ मनथी हरीने पधारजो सौ, थती पूरण काम॥८॥ एम कही थया अदरी रूपे, सणुं न जोगीवार॥ आव्या पोते निज मंदीरमां, कुंताना कुमार॥९॥ ॥

वलण॥ ॥आव्या वीर मंदिर विषे॥ वण वीजु गदाधार रे॥ रायन कर्युं नींद्रा सभे॥ धर्मे कर्यो विचार रे॥१०॥ ॥ईति श्री माहाभारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे श्रीकृष्ण कपि दृष्टांत दर्शीवनो नाम नवमो अध्यायः॥९॥ ॥

अध्यायः॥१०मो॥ ॥राग मारु॥ ॥

वैशंपायेन कहे सुणराय॥ तुज पिता ताणो महिमाय॥ प्रातःकाण थयो जेरले॥ ऊठ्या वीर जे पांचे तेरले॥१॥ स्नान संध्या लोजन वीधि करी॥ पांचे बांधव बेठा प्रीत धरी॥ पासे बेठां छे कुंता मात॥ पुत्र परिक्षत लेई साक्षात॥२॥ प्रेज प्रधान पूरजन सहु॥ ऊत्तम विप्रजन पिया बहु॥ सत्यवादी बेठा राजन॥ आपे युधिष्ठिर नीने मान॥३॥ धर्म कहे लीमसेन सांलणो॥ मुकीयो मननो अ

जणो॥ तुं छे पराक्रमी सुजवीर॥ तुज समो नही
जणधिर॥४॥ माटे कहुं छुं वीरा जाज॥ राजे गो-
विंदसौनी लाज॥ सकळधर्म तपास्या करी॥ हीम
पंथे जवा मनधरी॥५॥ मारे जवुं छे त्यां निरधार
॥ त्यां निरखे छे नंदकुमार॥ धरो राज्य तणो अधि
कार॥ पाळो धर्म सकळ वेदधार॥६॥ प्रजा पाळजो
भावे करी॥ जेसी आसन लज्जे करी॥ मुजथी
सत्य वचन लाजजो॥ शांतिगुण मनमां राखजो
॥७॥ भजजो श्री गोवरधन देव॥ वृध मातनी कर
जो सेवा॥ पुरपति कही छाना रहे॥ वळता वृकोद
र वाणी कहे॥८॥ जे कहेशो ते मोटी कथा॥ आपुं
तम साथे कुं सर्वथा॥ तमने छे कुण जुगनी जीक
॥ मुज हृदयमां धरी ठीक॥९॥ तम साथे नीश्चे पर
वरुं॥ राज्य लोग कुंतो नहिं करुं॥ मानुं नहि तम
वचन प्रमाण॥ रहुं तो श्री गोविंदनी आण॥१०
॥ जेम कही वीर छाना रह्या॥ वळता अरजुन रथि
ने कह्या॥ अर्जुन तमे छो परम पवित्र॥ मोहन सा
रथ्या तमारे मित्र॥११॥ राज्य पुरनुं करो तमो॥
सत्य वचन कहीए जमो॥ प्रजा पालण सत्य
आचरो॥ माता कुंतानी सेवा करो॥१२॥ कहुं ज
मांहे दृढ धारजो॥ प्रजा पुत्रनी पेरे पाळजो॥ वळ-
ता पारथ बोल्या वाण॥ तमो सांभळजो बंधु सुज

णा॥४॥ राज्यनुं नवलेशो नाम॥ अमो जावीशुं वैकुंठधाम॥ अमो प्रतिज्ञा कीधी घणी॥ रखुं तो आज्ञा श्रीमाता तणी॥४॥ पण ताव्यां युधिष्टर वात॥ तमो सांभळो सहदेव भ्रात॥ करो राज्यनो अंगीकार॥ उत्तम कुळ उत्तम वेह्यार॥५॥ जेशी आसन भक्ते अविनाशी॥ सती द्रुपति राणीने पास॥ गर्भ रथ अश्व मही नही मणा॥ करे सेवा रीवकघणा॥६॥ दास दासी तणो नथी पार॥ भर्या अंत्रु रधन भंडार॥ रीजे हैडेने छाना रहो॥ वण ताव्यन सहदेव कहो॥७॥ मारे राज्य कुळाकुळ पान॥ ज्यां जेगी त्यां छे परम नीधान॥ मु जने श्री गोविंदनी आण॥ विना राज्येन अेसु प्रमाण॥८॥ त्यारे वदिया युधिष्टर वाण॥ निकुळ सामे तेज्जेडीने पाण॥ करीए विनति वीरा अमो॥ मातामे वणसया हाळाछो तमो॥९॥ तेकारण तमो पुरमां रहो॥ राज्यनो भार मुस्तके लहो॥ सेवा माताजी नीकरो॥ कृष्ण नाम मुखे ओचरो॥१०॥ कहे छे निकुळ सांभळो भ्रात॥ नय करशो जे मुजशुं वात॥ जे कहीओ ते मिथ्या सही॥ सम तमारा रहीशुं नहि॥११॥ ॥

वलण॥ ॥ नही रहीए विर राज्यपर॥ कुं आवुं तमारी साथेरे॥ गोवरधन कहे माहरे॥ भगवत गोकुळ नाथरे॥१२॥ ॥इति श्रीमह

त्यारथी पांडव चरित्रे स्वर्गारोहीणी पर्वे युधिष्टर
त्राता संवादो नाम दशमो अध्यायः॥१०॥ ॥

अध्यायः॥११मो॥ ॥राग धन्याश्री

॥ ॥कहे वैशंपायन वचनजी॥ सांभळ पांडु
तणा तुं तनजी॥ जोत्या निकुळ जे पेरे त्यारेजी
॥कहे पांचाळीने धर्म त्यारेजी॥१॥ द्रुपद सुता सां-
भळजे वातजी॥ करजे रोषना कुंता मातजी॥ सा
सु वृद्ध छे तम जेवांजी॥ जग गंगा जमुनां ना जेवां
जी॥२॥ सासुने सुखमां नीत्य राखेजी॥ जेठ वै
कुंठनुं ध्यान धाजेजी॥ सासुने दुःख देशो नेहजी॥ पडशो
रौ रौ नर्क तेहजी॥३॥ माटे मनमांहे निश्चे करीजो
रहो हस्तिना पुरमां सुंदरीजी॥ अभिमन्यु तन परी
क्षत तेहजी॥ पांच वर्षनो जाणो तेहजी॥४॥ तेने
राज्य जे सारी सारजी॥ नरेश हिमपंथे नीरधारजी
॥ तमो पुत्रनी रक्षा करजेजी॥ मुख हरीनुं नाम उच्च
रजेजी॥ पा पण तीजो त्यां त्यां द्रुपद जाणजी॥ त
मो सांभळो मुज भरथारजी॥ सुंदरी कहे सुणो भू
पाळजी॥ नाथ विना नारी जाणो काळजी॥५॥ सन
ति स्त्रीने जेम आभरणुंजी॥ नीज कंथनुं रोषन कर-
णुंजी॥ जेम चंद्र विना जामनीजी॥ कंथ वीना तेवी का
मनीजी॥६॥ कंथ थकी जे जगमां रहे छे जी॥ तेने मर्म
वचन सहु कहे छे जी॥ अवगुणने नीरखे छे कंथजी॥

॥ ७ ॥ डोलवनण तरवानो पंथजी ॥ ८ ॥ नारीनेतो
नारायण पतिजी ॥ नव विमुख रहे होय सतिजी ॥
माटे मुकीने मुखने भरीजी ॥ पांच्येनारीविनाना
थारीजी ॥ ए ॥ मूकी गयानी हरीहुथाजी ॥ तोहुं
प्राणतजुं सर्व थाजी ॥ कुणजुगे स्त्रि धारी परत-
णीजी ॥ तेथी जीव लागे मुने घणीजी ॥ १० ॥ तेह्वा
रणहुं आवुं तम साथजी ॥ कहे छे हुं पांच्येना पिउजी
॥ हे स्त्रीना पुरमां रहुं आनजी ॥ लागे मात पिता
नेलाजजी ॥ ११ ॥ समजो विंदनाछे नहींजी ॥ स्या
मी राज्यमां रेहेवुं नहींजी ॥ पछी जटजण त्यां
नीरधारजी ॥ हीम जवापियां तैयारजी ॥ १२ ॥ उत्त
ममौरत लीधुं सारजी ॥ आप्यो परिसतने अधिकार
जी ॥ तेडाव्या त्यांहां माहा रुषीजनजी ॥ आप्यां मन
गमतां अहुधनजी ॥ १३ ॥ अतिमन्युनो पुत्र छे जेह
जी ॥ नपरावीने लाव्या तेहजी ॥ अंगे आभूषण घा
ल्यां सारजी ॥ प्रजा आवीछे लेवा अपारजी ॥ १४ ॥ ब्रा
ह्मण मंत्र भणेछे घणाजी ॥ पूर प्रधानमां नहीं म
णाजी ॥ बांध्याछे मंडप अहु सारजी ॥ मंदिर तेव
साणो नहीं पारजी ॥ १५ ॥ थाय दुंदुभीना घणा नाद-
जी ॥ सर्व जयजयना करे सादजी ॥ गाय गांधर्व नाचे
नारजी ॥ अंहि जन करीजोले अपारजी ॥ १६ ॥ छ्प्
पनियो मंगळ गायजी ॥ जाण परिसतनी वस्त

यजी॥ राज्या सनेजेसार्यां पुत्रजी॥ घर्युं परिस्न
त छीपरछत्रजी॥५॥ अश्वमातंगगजरथेहमजी
॥ आप्या विप्र प्रसन्नथायजेमजी॥ परिक्षितनेजे
स्नास्या राजजी॥ सोंप्युं प्रधाननेसहुराजजी॥६॥
ते दिवस जेम गया वहीजी॥ नयानी श्रयडीधुं
सहीजी॥ मनि वीर विचारे छे वातजी॥ नबुं सुध
री साथे प्रभातजी॥७॥ प्रातःकाले ऊठ्या सहु
वीरजी॥ माहाधनुरविद्याना धीरजी॥ मणि मा
तने पाये लाग्याजी॥ मुखे आशीर्वचन जहु
माग्यांजी॥८॥ लाग्युं पुत्र वियोगनुं दुःखजी॥ कु
रमायुं त्यां कुंतानुं मुखजी॥ आव्यो वात्सल्य प्रे
म अपारजी॥ चाली आंखथकी चोधारजी॥९॥
कहे कुंता राजन प्रगरयो छे तनजी॥ नहीं जवा देउं
पुत्रो वनजी॥ आंखे आंसुनी धारा वहे छेजी॥ वि
रपांचेने कुंता कहे छेजी॥१०॥ ॥वलण॥
॥ ॥कहे छे कुंता पुत्रने॥ लाग्यो तनमां ताप
रे॥ गोवरधन कहे ते पछी॥ कुरवा मांड्या विलाप रे
॥११॥ ॥इति श्री माहात्मारथे पांडव च
रित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे परिक्षीत राज्याभिषेक
वर्णनो नाम अगीआरमो अध्यायः॥११॥ ॥

अध्याय॥१२मो॥ ॥राग परजी॥

॥ ॥घर सुत सुनुं डरी आजरे॥ रणवपति

मुझो री कालरे॥ मध्य सागरे डुब्युं आज॥ हो मुज जाणाचो॥ मुजथी तम विना केम रेवारो रे॥ माराहो हिला दिन केम जरीरे॥ अंते कोण गति मारी थारी॥ हो मुज जाणारे॥४॥ मने सुनो लागे संसाररे॥ केम मुजथी छुट्यो परिवाररे॥ माहारे दरबार मारा कुमार॥ हो मुज०॥५॥ तमने जता जणी दुध तलसे रे॥ हुं री पुत्र हवे क्यां मलशेरे॥ मारां केहेलां वचन कोण करशे॥ हो मुज०॥६॥ मारी वृध्धपणानी वहारे रे॥ सुनो पुत्र विना संसाररे॥ कोने जई कहुं दुःखना पोकार॥ हो मुज०॥७॥ तम विना मुने केम गमशे रे॥ त्यारे वियोग वेदना दमशेरे॥ मारी रांधी रसोई कोण जमशे॥ हो मुज०॥८॥ मारा सुख दुःखना जाणनाराररे॥ केम वृध्धपणे थाजो न्यारारे॥ मारी आंखथी अधिक छो प्यारा॥ हो मुज०॥९॥ तम जतां पडी आंसु दुखरे॥ नही गोठे आ राज्यनुं सुखरे॥ हवे देखीश क्यां तम मुख॥ हो मुज०॥१०॥ मारा युधिष्टर गुण जाणेरे॥ मने प्यारा लागो सम प्राणरे॥ वचनि सत्य तणा छो जाण॥ हो मुज०॥११॥ तम जतां केम जवायरे॥ मन आकुळ व्याकुळ थायरे॥ मारो दुध तो पण मांनय॥ हो मुज०॥१२॥ भीमसेन सरिखो जाणरे॥ जोली जोलरी अपरी कोणले

तमअनतां अरी मारा भाण ॥ हो मुज ॥ ४ ॥ हे अंआ
सुर हरि गयो अन्यारे रे ॥ धायो रे तर विर पुत्र तुं याह
रे रे ॥ मारी मुझथी लाव्यो त्यारे ॥ हो मुज ॥ ५ ॥ हु
लावेला तुं जोवतो जोवने ॥ थातो हैडमां हर्षे ज
तो वरे ॥ लागे मीठा मने तुज बोल ॥ हो मुज ॥ ६ ॥
॥ जपिया अर्जुन सरखा पिर रे ॥ महाधनुरविद्या
नाधिर रे ॥ केम वन अनतां टकोरी रीर ॥ हो मुज ॥ ७ ॥
रणमां कौरव हणवूं अधडाया रे ॥ माहा कर्णसमा सं
हार्या रे ॥ द्रोण गुरु सरीखा ने मार्या ॥ हो मुज ॥ ८ ॥ पा
मारा सहदेव सरखा तन रे ॥ कही नव लोप्युं मारुं व
चन रे ॥ तेने गति पोंहोंच्ये गगन ॥ हो मुज ॥ ९ ॥ दा
अणता जाजा ग्रहमां सहु त्याले रे ॥ पुछ्युं सहदेव
ने ते वारे रे ॥ तुरत देखाड्युं आजु त्यारे ॥ हो मुज ॥ राजा
मारा निकुण छल सोहागी रे ॥ कोण न मरी लोचन
लला भागी रे ॥ केम वन अनरी ॥ मुज ने त्यागी ॥ हो मु
ज ॥ ११ ॥ सारां वस्त्र सजी कोण हरशी रे ॥ कोण माथडी
मुजे ऊँच्य सरीरे ॥ कोने अर्धउपान माइ भरी ॥ हो मु
ज ॥ १२ ॥ मारा नेन थकी प्यारा पुत्र रे ॥ तम विण सु
नु घर सुत्र रे ॥ केम मुकी अनरी मने पुत्र ॥ हो मुज ॥ १०
॥ तम विना आ तन टळवळशी रे ॥ माहरु दुःख
ते कोण हणशी रे ॥ मारो समरी अन सुनो जळशी ॥ हो मु
ज ॥ १४ ॥ ल्यासे ऊँतर मुने सहु गाम रे ॥ नथ गो रहे

घरनुं अमरे॥ धिग् पुत्र विनानो ठाम॥ हो मुनिराज
॥ मारुं आघ गयां कोण सारे रे॥ करी क्रीयाने कोण
उध्धारे रे॥ तम जतां नथी कांई मारे॥ हो मुनिराज
॥ वणि रे॥ रुममां जेम फेरवुं रे॥ पुत्र विना तो नर्के
रहेवुं रे॥ केम मोत नाव्युं तम पेहेलुं॥ हो मुनिराज
॥ ॥ वलण॥ ॥ मोत नाव्युं केम
जतां पेहेलुं॥ नथी रहेतुं स्थिर मनरे॥ आंसे
आंसु चालतां॥ कहे छे गोवरधन रे॥२५॥ ॥
इतिश्री माहात्मार्थे पांडव चरित्रे स्वर्गारोहि
णी पर्वे कुंता विलापवर्णनो नाम द्वादशो अध्यायः
॥१२॥ ॥अध्याय॥१३मो॥ ॥
॥राग गोडी॥ ॥वणि माता कुंताए बो-
लियां, हो जाणा रे॥ विरानही नथी दीठां वन, व
डा राजवाणा रे॥१॥ होमण कथा तम तणी, हो
जाणा रे॥ मारा जाऊं वायां तनना॥ वडा राजवाणा
रे॥२॥ तम वियोगे मुजथी रहेवाय ना॥ हो जाणा
रे॥ मने मुकीने जशो केम, वडा राजवाणा रे॥३॥ पा
येंकुं दकुंकुंर पुचरी, हो जाणा रे॥ नहीं चलाय वसमी
वाट॥ वडा राजवाणा रे॥४॥ शार्दूल वृक्षा केम वेठशो॥ हो
जाणा रे॥ केम ओळंगशो गीरीघाट॥ वडा राजवाणा
रे॥५॥ व्याघ्र सींह वनमां घणा॥ हो जाणा रे॥ कंड
राक्षस होशे अपार, वडा राजवाणा रे॥६॥ साथे

आयुष्य नथी राखता, हो जाणारे ॥ पेस धन मांहे
करना ॥ घडाराग ॥ छ ॥ केम हिम वेठा रे तें हुंथी हो
जाणारे ॥ तज्यां वस्त्र आलूषण सार ॥ घडाराग
॥ ट ॥ माटे हिम पंथे जरो नहीं, हो जाणारे ॥ मारूं
वचन मानी रहो आंह, घडाराग ॥ ला ॥ मारा डीया
जनमना कर्म हरी, हो जाणारे ॥ ते तो आवीने न
डीयां आज ॥ घडाराग ॥ ५० ॥ आजो जनमारो युद्ध
मांडीओ, हो जाणारे ॥ नवस्तु जे कर्युं कहिरागाघ
डाराग ॥ ५१ ॥ चात सांजणी पुत्र जनवालणी, हो जा
णारे ॥ चेहरे करचत काण जनु मांहा ॥ घडाराग ॥ ५२ ॥
हवजाग्यो छे मारा अंगमां, हो जाणारे ॥ हवे जावी
ने जईजे क्यांय ॥ घडाराग ॥ ५३ ॥ मारो पापी प्राण
जतो नथी, हो जाणारे ॥ हरी किया जनमना लोग
॥ घडाराग ॥ ५४ ॥ जेम कहीने कुंताजी रडे, हो जाणा
रे ॥ केम सहेवारो पुत्र वियोग ॥ घडाराग ॥ ५५ ॥ जे-
वां वचन सुणी धर्म बोलीआ हो मातारे ॥ तमे
थिर जराजो मन ॥ सुणो सुजहातारे ॥ ५६ ॥ आ-
वे आगण कणि कुपरो हवे हो मातारे ॥ थारो पापी
पूरना जन ॥ सुणो ॥ ५७ ॥ माटे राज्य हवे करवुं न-
थी हो मातारे ॥ कहि विघ्न नडे नहीं कांय ॥ सुणो ॥
५८ ॥ अमो कुजेहमी रेंगुं कापने हो मातारे ॥ जईरें
गुण धवल जेठा स्न्याय ॥ सुणो ॥ ६० ॥ मलुपे-

धारीया वैकुंठमां, होमातारे ॥ अमोलखीरे हरिनी पासा ॥ सुणो सुजनारणा ॥ हवे मणरुं माको गोलोक मां होमातारे ॥ नव थातां कहि उधरी ॥ सुणो ॥ २ ॥ प्रधान पदवी आपणो होमातारे ॥ धर्म रीते अजावरीरीराखा ॥ सुणो ॥ २ ॥ रक्षण करजो पुत्र परी क्षतनुं होमातारे ॥ कुलरीते करो सह काज ॥ सुणो ॥ ३ ॥ आपो आज्ञा अमोने मावडी, होमातारे ॥ ले ई रहुं कन बाधि जे सार ॥ सुणो सुजदातारे ॥ ४ ॥

॥ ॥ धलाग ॥ ॥ रहुं कन लेई ने बाधिजे ॥ माताद्यो आज्ञायरे ॥ गोवर्धन कहे नेत्रथी ॥ धारा ध्यानी नयरे ॥ ५ ॥ ॥ इति श्री माहात्म्ये पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे कुंता उद्धारो वर्णो नाम त्रियोदशो अध्यायः ॥ १३ ॥ ॥

अध्याय ॥ १४ ॥ ॥ राग आशावरी ॥

॥ ॥ कलपांत करतां कुंता माता, जोली जो ते ठाम ॥ लाड कुवाया पुत्र विना मने, केम गमे आ धाम ॥ १ ॥ धर्म समा मारा लालाजी, ते जीरे कयांथे मुज ॥ लूंछ्या तरस्या धारो त्यारे, शोने कहेशो दुःख ॥ २ ॥ आयुष्य ओक नथी तम पासे, मुजे ते जो जो जोल ॥ ३ ॥ कमकरी तमो कोमण अंगे, वेठीश दुःख अतोल ॥ ३ ॥ युधिष्टिर कहे माता मारी, नकरवी चिंता याय ॥ ४ ॥ पडरीक दुःख ते सरवे, राम्युं गोविंदनु पाय

॥૪॥ પછી પ્રદક્ષણા કરી પાંચે પઞ્ચા એ પાંચે પુત્ર તે ઠારા કરને જઈને સનમુખ ઊભા, ત્યાં કુંતાના કુમા રા પાંચે ॥ ત્યારે માતાએ રદય સાથે, ચાંપ્યા પાંચે વિર, મોકળે મનથી રૂદન કરતા, મૂકી મનથી ધીરા ॥ ૬ ॥ તે સમાની શોકવારતા, કવિ મુખથી ન કહેવાયા ॥ પાંચે વિરના નેત્રમાંથી, ધારા ચાલી નયા ॥ ૭ ॥ નિશ્ચે ન એવું માતાએ, તે નરી પાંચે ભ્રાત ॥ ૮ ॥ કરૂણા કરીને કુંતા કૃષ્ણએ, મુસ્તક મુક્યો હાથ ॥ ૯ ॥ ચરણે નમીને ચાલિયા ત્યાં, પાંચે ભૂપતિ સાથ ॥ ભય નથી ગણતા કોનો, તેને સહાયછે વૈકુંઠ નાથ ॥ ૧૦ ॥ એક એન પર આવીયા ત્યારે યુધિષ્ઠિર કહેવાત ॥ સાંભળને એક શીક્ષા મારી, હરણ પાંચે ભ્રાત ॥ ૧૧ ॥ હાથ ને ઈને અરજુન બોલ્યા, કહોને કરીએ કેમ ॥ આજ્ઞા આપો જમને વિર, આચરીએ સહુ તેમ ॥ ૧૨ ॥ વચન સુણીને ધર્મ વદ્યા ભાઈ, ભવું કરીની પાસ ॥ માટે જ સત્ય અન્યા નવ કરીશો, ન થાવું મન ઊદાસ ॥ ૧૩ ॥ કામ ક્રોધ લોભ માયા મમતા, તજવો જતિ અહંકાર ॥ કષ્ટ કરે કદી કોઈ અસુર, પણ કરવો નહીં સંહાર ॥ ૧૪ ॥ મુની વૃત્ત ધારવું આપણે, બોલવું નહીં કોસ થા ॥ વન કુળ પહેરી અંગે વિર, ભજવા વૈકુંઠનાથ ॥ ૧૫ ॥ ત્યાં એ શ્રી કૃષ્ણ જપતા, ચાલ્યા વન મોઝાર ॥ ગળ્યા લે ધિર પાંચે, પાછળ ભૂપતી નાર ॥ ૧૬ ॥ પાસ

રિતાનું જળપાન કરે, અને વનફળનો કરે આહાર॥
આલ જોડે અવનીપથિરતા, કુંતાના કુમાર॥ ૫ ॥
શ્રમ કરતાં દિન ચાર થયા, આવ્યા વૈકાશ્રમની માંય
॥ કેદારેશ્વર શીવતે સ્થાનક, કીધી પૂજન ત્યાંયા॥ ૬ ॥
ગંગાજળમાં સ્નાન કર્યું અને, સંતોષ્યા શીવરાયા॥
તપશી સન્યાશી ત્યાં રહે છે, નમીયા સર્વને પાય॥
૭॥ ત્યાંથી પાંડવ આગળ ચાલ્યા, સતિ ભૂપતિ સં
ગ॥ મુનિવૃત્ત ધાર્યું છે સૌએ કષ્ટ સહે અંગ॥
૮॥ આયુધ્ય એક નથી તે પાસે, હાથમાં તુંબીનું પા
ત્ર॥ વસ્ત્ર નથી ધિનતાને અંગે, ગોદડી ઘાલું ગાત્ર॥
૯॥ ધર્મ રાહે થયને નિકુણ સર્વે, ચાલે છે અરણ્ય
પાય॥ ૧૦॥ મ મુખ થયાં છે સૌનાં, શણિ પડી ગઈ કાય
॥ ૧૧॥ ગંગાતટ પર ચાલે પોતે, પવિત્ર જળનું કરે પાન
॥ મહાવન લાગે જિહ્વા મહીં, લૂલે કાયર તનનું ભાન
॥ ૧૨॥ મુખે શ્રીહરી નામ લેતા, ચાલે પાંચે વિરા॥ અં
ગે ઊઝરડા બહુ થાયે, શોણિત ચૂવે શરિર॥ ૧૩॥ એ
વીરીતે અતિ દુઃખ વેઠી, આવ્યા બે જન વિરા॥ અ
ઘોર વન ત્યાં આવી રહ્યું, બોલે વનવાસી સહુ હિરા॥
૧૪॥ કૌતક એક થયું તે સ્થાનક, ત્યાં વિર પાંચે જાય
॥ અપછરા આવી ઇન્દ્રલોકથી, વળતું ત્યાં રે થાય
॥ ૧૫॥ ॥ વલણ॥ ॥ અપચ્છરા આ
વી ઇન્દ્રલોકથી॥ મહા મનોહર રૂપે રે॥ ગોવરધનક

हे गान तान करी॥ लोजववाने लूपेरे॥२६॥ ॥ ईतिश्री माहात्मारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे पांडव वन प्रवेशो नाम चतुर्दशोध्याय॥१४॥ ॥अध्यायाः१५मो॥ ॥

राग भाउनी देशी॥ ॥आवी अपच्छ शारे, अमरापूरीथी सौ मणि॥ माहावन मांरे, राजकुंवरने रोकी वणि॥१॥ गान तानथीरे, तान लूलावा कारणे॥ आवि नारीओरे, मीष्ट वाक्य मुखथी लणे॥२॥ करि मेजवारे, पायमां नेपूर सारियां॥ ओढी चुंदडीरे, कुसुम हार आरोपियां॥३॥ तावा लंबोविधिरे, अवनिओ पग नथी मेलती॥ कीणागान मांरे, आंतेथी आजा खेलती॥४॥ भन मोहनीरे, मोह पमाडे सर्वने॥ लेई गतिरतिरे, गुणवंती मुके गर्वने॥५॥ रुप मनोहररे, अंजन कीधी आंखडी॥ लाजेरीज करीरे॥ अधर गुलाब नी पांखडी॥६॥ युवावेरी मांरे, लामनी ओ लूपचंरीजा॥ आवी घूलेई नेरे कुंताकुंवर विस्मय पया॥७॥ आवी अंगनेरे, आलींघन दे लामनी॥ नग्न स्वरूपेरे, कयाहेजाडे कामनी॥८॥ पुत्र पांडुनारे, करे वीमाशण मनमां॥ आते शुं थरीरे, आकृत आवी वनमां॥ ९॥ वनिता कहेरे, मंदिर पधारो माहरे॥ वणी लोगवोरे, आशा सहु पूरी ताहरे॥१०॥ पछी

विनता एरे, कुंताकुंवरना कथ्रह्या ॥ मनमानतारे, मो
हनस्वामी मने मल्या ॥ १४ ॥ माटे शीघ्र जारे, कामज-
मांई सफल करो ॥ नही छोडीएरे, संगे जमारी परवशो
॥ १२ ॥ तव बोलीजारे, धर्मे धरम मनधारीओ ॥ कुं
वियन करोरे, नरनवाद्यो नारीओ ॥ १३ ॥ करी त्याग-
नेरे, शाल्यपार रणवालीआ ॥ पुत्र प्रेम हारे, मूकी ही
माणे मालीआ ॥ १४ ॥ शालवुं हीममांरे, हरीरी रणे मन
राणीयुं ॥ माटे माननीरे, मीथ्या वचन कम लाणीयुं
॥ १५ ॥ पर स्त्रि तणोरे, संग कही करीशुं नहीं ॥ ब्रह्मचा-
रीनोरे, धर्म सदा पाळशुं सही ॥ १६ ॥ माटे करगरीरे,
कहुं छुं तमोने कामनी ॥ रहोवेगळांरे, लूष्ट करो नहीं
लामनी ॥ १७ ॥ कोटी ऊपायेरे, हा कहुं नहीं हुं तो कधा
ले आवीपडेरे, मुसकल मोटी आपद ॥ १८ ॥ मोरयुं
चीतडुंरे, मत्तुलूनना चरणथी ॥ माटे माननीरे,
नव डरवुं कहि मरणथी ॥ १९ ॥ नाहणे नगमहीरे, कोधी
कटक विडारीयुं ॥ तेणे आसमेरे, विनताने रीसे
नमावीयुं ॥ २० ॥ तेणे नरथीरे, कौरवदल कटका कर्या
॥ तेवा अर्जुनरे, हाथ नहीं ऊलारह्या ॥ २१ ॥ तेना
पगवडेरे, धराध्रुजे धमकारथी ॥ जेवा भिमसेनरे,
ऊला हरिणीनी हारथी ॥ २२ ॥ पछी पडअडेरे, हु-
रीपडी, विरपासमां ॥ जहरीथिथरे, जपच्छ राग
छत्र्याकरीमां ॥ २३ ॥ पांचे विरजेरे, विनता चेटक

थी विस्मय थया ॥ सतीने सेई रे, कुंता कुंवर आग-
ळ गया ॥ २४ ॥ मुखे श्रीहरि रे, नाम जपे नहु विसनु
॥ वनकुण सजो रे, आयुष्य दीधुं शरीरनुं ॥ २५ ॥ द
श जोजन रे, आव्या अधिपती जेटला ॥ त्रण गिरि
वर रे, दिठा पांडवे तेटले ॥ २६ ॥ अट जोजन रे, उं
चाई ते गीरीवर तणी ॥ तार जडा रे, तरुवरनी
शोभा घणी ॥ २७ ॥ ते गिरि महीं रे, वसे राक्षस इतु
नाम छे ॥ गिरीशेख पर रे, ते दानवनो मुकाम छे ॥ २८
॥ ॥ वलण ॥ ॥ मुकाम छे ते दानव तणो
गिरीगुफानी मांय रे ॥ गोवर्धन कहे सांभळो ॥ आ
व्या पांडव त्यांय रे ॥ २९ ॥ ॥ इति श्री महा
भारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे जपयज्ञ
पांडव संवादो नाम पंचदशो अध्यायः ॥ १५ ॥ ॥
अध्याय ॥ १६ मो ॥ ॥ राग माडु ॥ ॥
वैशंपायन कहे सुण राय ॥ स्वर्गारोहिणीनो महिमा
या ॥ रहेतो इतु राक्षस तेणे ठाम ॥ सहस्त्र राक्षणी ना
रीनुं नाम ॥ १ ॥ तेह थाय कुंआरीनी मात ॥ इतु राक्ष-
स तेनो तात ॥ ते वळा जेरी थई छे पेरा ॥ हतीकुं
आ तातने घेर ॥ २ ॥ परणी कुंज. लिमनी साथ ॥
नथी जाणतां मा अने तात ॥ पासे जे सारी पुछे छेव
ता ॥ कहे पुत्री तुं परण्यानी वात ॥ ३ ॥ कोनी संगे ते स्व
पण कीधुं ॥ तुज स्वामिजे शुं सुख दीधुं ॥ वकती यही

हुंआयाणी॥मारीसासरीलगमांलणाणी॥
२॥हस्तिनापुरनापांडुराया॥तेतोससरा॥हुंभा-
रथीया॥पांचपुत्रछेतेमनेपेटा॥माहारेदरविर
अजिया छेनेटा॥पां॥तेमध्येजेकलीमसेनत्या
ता॥तेनोमाकमेंग्रह्योछेहाथी॥तेनाथीथयोपुत्र
श्रेहु॥नामगटोरगच्छविवेका॥६॥गटोरगच्छ
नेछेधणीपुत्रा॥मेघनादछे तुलहोहित्रा॥लोईपरि
वार हरखी माता॥रीह स्त्रामनमां थईरळियात
॥७॥कहेमातहुंमकुंछुं जेलगा॥कुमतडीनलाधीला
णेलगा॥त्यारेजोळीहुंजावाता॥तुंतोसांलण
मारीमाता॥८॥तेनाकाकाने पिताछे लेहा॥लद
कुरुक्षेत्रमांतेह॥गया॥कुमकेपितानीपासा॥गटो
रगच्छअनेमेघनादा॥लोश्रमपुत्रीअनेमणी
माता॥कुरेसरवेसगाईनीवात॥तेहस्थानकपां
उवगया॥लोईरासिसविस्मयथया॥९॥गई
हुंआनीत्यांदृष्टा॥हीठास्वामीदीयर अनेजेष्ट
॥लोईस्वामीनेमनविचारी॥ऊठीतुरतहुंजा
नारी॥१०॥लईधर्मनेनाम्युंशीश॥कुंकुंत्यांथी
आव्याआशिशा॥लागीलईलीमसेननेपाया॥
त्यांथीपधारिया अतिकाया॥११॥अर्जुनरीहदे
वनेपायेलागी॥सतीनेनमीआशीशमागी॥
आप्युंआसनजेठांछेसर्वा॥नथीकोईनामनमां

गर्वा॥३७॥ बोली हेडंबा मातनी पासा॥ कहे वारता
थईने हुल्लासा॥ बोली हेडंबा सांभळ माया॥ तु
जन्ममात्र जा भीमथी आया॥३८॥ नेई माता जाण-
द्यो भीमना॥ कहे हेडंबाने घनघना॥ पछी भीमसेन
ने शीरनामी॥ कहे हेडंबा सांभळो स्वामि॥३९॥ पा
पुत्र घटोत्कच ज्यां गयो॥ मेघनादनी पासे रह्यो
॥ ते तो कहोने वर्णवी वाता॥ तेथी ह्रदयमां थाउं रळि
आता॥४०॥ कहे भीमसेन सांभळ नारी॥ कहुं वार
ता अे विस्तारी॥ कीधुं रणमां युद्ध अपारा॥ घणी
सेन्यानो कीधो संहारा॥४१॥ कहुं पुत्रनुं रुडुं रूप विशा
महाधनुर्विद्याना धीरा॥ कोटि कटक विडार्युं जेणे॥
मोटा महारथी मार्या तेणे॥४२॥ करी युद्ध तेअे अपर
म पारा॥ गयो वैकुंठनी मोझारा॥ गयो मेघनाद पण
त्यांय॥ पिता पोताना हता ज्यांय॥४३॥ कहे तां
ली आंसुनी धारा॥ धरणी ढळी जां कुंतानां कुमार
॥ पडी हेडंबा अचेत थई॥ लाल नतननुं भूली गई॥४४॥
ते समे हवो हाहाकारा॥ चाली सर्वने आंसुनी धार
॥ लणे वाग्युं हेडंबाने आणा॥ छाट्युं ताणपुंने गं-
या प्राण जारी॥ ऊठी भीमसेन बेठा थया॥ पण प्र
ण हेडंबाना गया॥ तेथुं ऋतु राशि सनेहा॥ घणुं
आक्रंद करे छे देहा॥ परा॥ रोह स्म नासिणी रोवाने
लागी॥ हा पिटुं टीने छाती लागी॥ कहे छवी हवे रुं

करवुं ॥ पुत्री दुहीत्र पाछळ मरवुं ॥ २७ ॥ यह्यापे रव
तणे पर नणा ॥ मुकी पड्तुं ने खोया प्राण ॥ इतु रा-
क्षसे पण कर्युं एवुं ॥ निज पत्नि जेडी धुं जेवुं ॥ २८ ॥
थयो मोक्ष ते त्रणेनो त्यांय ॥ आव्यां वैमान जे वां
ते मांय ॥ गयां वैकुंठ नीर मोझार ॥ इतु रोहस्य मे कं-
मानार ॥ २९ ॥ ॥ वलण ॥ ॥ हेडंबा
ने मात पिता ॥ वैकुंठे ते जयेर ॥ गोधर घन कहे सां
लळो ॥ त्यार पछी रंगु थायेर ॥ ३० ॥ ॥ इति
श्री माहात्मारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणीप
र्वे इतुराक्षसादि मृत्यु वर्णो नाम रोरषो अध्या
यः ॥ ९ ॥ ॥ अध्याय ॥ १० ॥ ॥
राग आशावरी ॥ ॥ वैशंपायेप्राणी वद्या
तुं सुण जन्मेजय राय ॥ जेरीति वैमाने दानव त्रणे
वैकुंठ मध्ये जया ॥ १ ॥ त्यार पछी त्यां रंगु थयुं ते, कहुं
छु सर्व वृतांत ॥ प्राश्चित जय पांच पडीनुं ॥ जागे मन-
न नीत्रांत ॥ २ ॥ आव्या चीतथी श्री हरी जपता, पांड-
व पांचे वीर ॥ वीरा जेजन पर आव्या त्यां थी, मनु रवि
ख्यानाधिरा ॥ ३ ॥ आव्युं रोहेर ओक सरस रीते ल्लितुं,
रमणी कदीसे ठाम ॥ पांडव आव्या मीत्वे रोहेरमां,
नागपुर छे नाम ॥ ४ ॥ आयार पास पर्वत छे रुरता, घो
र गुफानी मांय ॥ लिंग नामे सरोवर मोटुं, रोहेर
समीपे त्यांय ॥ ५ ॥ स्नान संध्या कीधी सरोवर मां,

वनकुण दीधा॥ अश्वारा॥ पुरजनेवानेयालीया त्यांकुं
ताना कुंभार॥३॥॥ रामरामजनेधाने माटे, करतापंड
वराया॥ ते स्थानकमांपांचेविरे, दीरोमहाजन्या
ग॥४॥ चार वर्णमांधर्मनथीकोई, नयलेहरिनुं
नाम॥ नालजतमांत्मानन्थी, जेअग्रसरवेग
मा॥५॥ करतापांडवसतिनी साथे, अन्नरमध्येजा
व्या॥ हाहाकारनो शोर जनेई, गुणवंतामनहरवाया
॥६॥ जेरसामांजेकस्थानके जकलराया हिमा
लना॥ ते जेयानेकारणे त्यां, गयुंलीमनुं मन॥
रणा पांचलाई ते स्थानक जईने, पुछी सघणी
पेराकहोलाई आशुंकरयुंछे॥ कोनी साथे वेर॥
८॥ जेक कहे अमो हीरा सहस्त्रनो, दाम अर्पीने पक
डया॥ पण कन्या मोकलता नथी, जेथी रोके छे अ-
न्या॥९॥ जीलेक लाई मुनजाणकीने, दीधुं
जोगेजेरा॥ माटे नही मोकलीजे पुत्री, जे दुष्टोने
घेर॥१०॥ तेसुंजेईने पांडव्यावाल्या, शलुहारमो
आर॥ धर्म लिम निकुणरोहेदेवने, साथे भूपतिना
र॥११॥ त्यांपण जन्या अतिरोदीसे, नहीन्याय
जवलेरी॥ भलतणुं पालणनवकरता, नही स-
त्य उपदेश॥१२॥ युधिष्टर कहे दुष्टरोहेरमां, नथी
रोजयो वास॥ माटे चालो स्थानक मुकी, तजेअ
धर्मी अवास॥१३॥ जेम कही पुर त्यागकरयुंने,

आव्या ते वन जारा ॥ अघोर वन त्यां ओपी र-
ह्युं छे, तरुवर लार अढारा ॥ ४ ॥ अपरंपरन त्यां
थाय छे अछो, जेठो कुणकुणिकाग ॥ आगळल
तां पांडु पुत्रने, आडे ऊतर्यो नाग ॥ ५ ॥ करके ध
र्मनुं धाम लोचन, त्यां आंजेल लगाया ॥ वायु
वाये ऊलटो अवनीपर, लानु लोम लय थाया ॥
डाबे पासे बोली लैरवी, जेशी सुकुडाणा ॥ अरता
ताराद्दीठा यरमे, पडी पेटमां झाणा ॥ ७ ॥ ऊल्जुकु ल-
मणी पासे जेशी, साह करे लयंकार ॥ लंबुक शोक
करे गुल करता, अपरंपरन अपार ॥ ८ ॥ धर्म कहे शुं
थाशे विरा, ऊच्चाट भारे मन ॥ लागे धराम ने भुलती
वणी लासे लयानकु वन ॥ ९ ॥ शोक सागर ऊल-
ट्यो अति मनमां, विघ्न नडे कांई आला ॥ विमासी
ण करता वनचारी, कुम रहे कुणनी लाज ॥ १० ॥ शो
कधरी सकु आगळ चाल्या, आव्या पर्वत जेका ॥
विस्तार ऊंच नो विरी लेजन छे, महा जन मुके टेक
॥ ११ ॥ तेह गिरीनी गुफा महीं जेक, राक्षस कहे रोक
रा ॥ मेघनाद तेनो अधिपती, राखे मनुष्य साथे वे
र ॥ १२ ॥ पुरवासी सौ राक्षस सरखे, हींसा जीवनी
करता ॥ रामनाम मुखे नव वदता ॥ हरी पकी नव
डरता ॥ १३ ॥ ॥ वलण ॥ ॥ नव डरता ह
रीनाम थी ॥ असुर महा विक्राण रे ॥ गोवरधन कहे

अधिपति तेनो अन्नराक्षसनो जाणरे ॥ २७॥
॥ ॥इति श्री माहात्मार्थे पांडव चरित्रे स्व
र्गारोहिणी पर्वे पांडवो नागपूर प्रवेशो अपरेतह
नवरणो नाम सप्तदशो अध्यायः ॥ १७॥ ॥

अध्यायः ॥ १८ मो ॥ ॥ राग धन्याश्री ॥

अन्नराक्षसनो ते जाण जी ॥ मेघनाद महाविक्रा
ण जी ॥ मेघपूर छे शेहेरनुं नाम जी ॥ गीरी उपर ते-
नो मुकाम जी ॥ १ ॥ पांडवे कीधो पूरमां प्रवेश जी ॥ के
टा मुस्तक जोगीनो वेश जी ॥ नहीं तुं रहेवुं आ शेहे
रमां लगार जी ॥ मारे निकल्या पांडव जद्यार जी ॥ २ ॥
जेवे नारदे विचार्युं मन जी ॥ त्यां जे हता अ
न्नसदन जी ॥ मेघनाद छे मोटो असुर जी ॥ देई दुः
ख सतावे छे सुर जी ॥ ३ ॥ माटे घातकु जेनो घणं
धुं जी ॥ मेघनादने पांडव लडावुं जी ॥ त्यारे हिमाणे
पांडव त्यारे जी ॥ कह्यो जोग हणे जेने त्यारे जी ॥ ४
॥ पछी उठीया अंतर नमी जी ॥ आव्या अंतरीक्ष
अंतर नमी जी ॥ मेघनादने मारीने पेठा जी ॥ के
ई असुर सभामां बेठा जी ॥ पा त्यांई असुर त्यां
आनंद पाम्यो जी ॥ देवि मुनीने हुकम चिराम्यो जी
॥ कहे धन्य भाग्य मुज आज जी ॥ कह्यो जमरनशुं
कंठ कुल जी ॥ ५ ॥ कहे नारद घणता पाणी जी ॥ जो
ब्यो होड तो हुकमडुं लणी जी ॥ तुल मामो मघहाल

वनेकृजी ॥ मार्यो हतो अर्जुने तेकृजी ॥ ६ ॥ लीधा
धनमां जे पारथे प्राणजी ॥ साच्यो रीत्रु जे तारो
भणजी ॥ वैर जेवुं होय भे तारे जी ॥ आव्या
अर्जुन जे तुम्हारे जी ॥ दाणी भलाई छे.
संगे च्यार जी ॥ वणि द्रुपति सरषी छे नार जी
॥ नथी आयुध्य कोईनी पास जी ॥ भय हिमागोप
ईने उदारी जी ॥ ना माटे भईने जे पांचेने मा
र जी ॥ नाथ हरण करीने तेनार जी ॥ नारी नक्षत्र
रूपनुं धाम जी ॥ भेई नाखे रति मुके माम जी ॥ ७
॥ माटे उठ भ तेणे ठाम जी ॥ कर शीघ्र उतावणुं का
म जी ॥ एवुं सुणी उठ्यो मेघनाद जी ॥ कीधो गर्ज
भयंकर साद जी ॥ ८ ॥ भय पांडवने सति बेहु जी
॥ दोड्यो दानव पुंठळ तेह जी ॥ आगण चाले छे
पांचे वीर जी ॥ मुखे भपता श्री राम रणधीर जी ॥ ९
॥ पाछळ भय छे द्रुपद आण जी ॥ पुंठळ थयो छे दा
नव काळ जी ॥ पांडव आगण चालता भणी जी
॥ सही द्रुपतिने घेर जाणी जी ॥ १० ॥ नव भणी
आ पांडवे वात जी ॥ भय आगण भपता नाथ
जी ॥ नथी भेता जे पुंठळ वाणी जी ॥ भणे आवे छे
द्रुपद आणी जी ॥ ११ ॥ नव भणे कपट आवुं थाशे
जी ॥ कोई काम नहीं ने लेई भरी जी ॥ दानव सति
ने लेईने चाल्यो जी ॥ मेघपूरनो मारग झाल्यो जी

॥ऐपा॥ हरे सतिशुद्ध अपार जी॥ आले जोजे जां कुडांनी धार जी॥ हतुं माणियुं पोतानुं त्यां थ जी॥ जेह क्षणमां गयो हैत्य त्यां य जी॥ ॰॥ जे सारी तेमां भूप हप्राण जी॥ मूछ्या सहुका हानव रक्षपाण जी॥ हरे आक्रंद पंचाणी सति जी॥ जे रे हैव जारी यारी गति जी॥ १७॥ ॥ बलण ॥ ॥ईगति यारी गोविंद जी॥ क्यांथी भग स्युं पापरे॥ गोवरधन हुं ते समे, करचा मांड्या वि लापरे॥ १८॥ ॥ इति श्री माहात्म्यार्थे पांड व्य चरित्रे स्वर्णरोहिणी पर्वे भूपति हणों नाम अष्ट दशो अध्याय:॥ १८॥ ॥ अध्याय १९ मो॥ ॥राग मल्हार॥ ॥ पंचाणि पोकारे रे रेह्यो यारे धाब्बे विठलोरे॥ टेक॥ सुअ हु अना चित्तागी, रामणिया धाब्बे वाहारे॥ तम विना त्रिकम जी, आहानव कोण निवारे॥ जे ल हि आवो अहप तो, मरयुं मउरी मारे॥ पंचाणि पोकारे ॥१॥ हया नीधी ह्याणु, आवेणा रो ऊधा रो॥ मोरा रास सने हैमी, अहु कपमणे छे मारो ॥ रामणिया सुअ ना हाता, विश्वास धर्यो में तारो॥ पंचाणि ॥२॥ विपत्ति वेणा विठल, यारे होडो छो मारी॥ जारा॥ राखी आनजेला, अेही हवी तमारी॥ होपदी आवेणा जणी, संताणो

श्रीगीरधारी॥ पंच्याणी॥३॥ दानवनां मोटां टोळां,
आवेछे मुज आवासे॥ केहेरो जेहधनकुं मुजथी
तो नथ जोजारी॥ स्वामीते संकट जाणि, मारो
जुवडो हृदकी जरी॥ पंच्याणि॥४॥ हस्तिनापुर
ना राजन, मुज धर्म सरीजा स्वामि॥ मुज माथे
मोहन मोटा, गाजेछो अंतरजामी॥ कीयाकर्मना
जोगे, कुवियोग दुःखडां पामी॥ पंच्याणी॥ पागया
हता वनवासे, स्वामी तेडीने साथे॥ सणधारम
नेनवदेजोतो, सोधावोजनहाथे॥ केमतजीगया
तरछोडी, मेहएडरां आव्युं माथे॥ पंच्याणि॥५॥ जाल
शी सत्तामां जूधर, संकट लणीने धाया॥ जय
सेंनवाणुं पुरीपापीना हाथि दुःखआव्या॥ जनेकेम
आज विसारी, हरजीवन हजु नथआव्या॥ पंच्या
णि॥६॥ दुर्वासा रोहस्त्र छंट्यासी, तेडीलाव्या जु
नन मां॥ ब्राह्मणने लोजन आपी, जजन मु
जराजीवनमां॥ केम आवेणा विसारी, त्रीकम
जी रहोत्रेवडमां॥ पंच्याणि॥७॥ जाजा ग्रह जण
ता जाणी, गोविंदजी गरुडे आव्या॥ अग्नीमांथी
ऊगारी, जटजणनी हरीजे डाया॥ कीया जन्म
नेपापे, आवेणा ऊतारी माया॥ पंच्याणि॥८॥
॥मुजजिम सरीजा स्वामी, केमकुं विण तमनेग
मशै॥ नथजीवीसोधजमारी, आवियोगदुःख

डां हमशे ॥ मुजमाया कहो केम मूकीशे रीते रोके ज्या
समशे ॥ पंथ्याणि ॥ १० ॥ कीया कृपा करे मुज उपर, कुद-
ष्टि स्वामि कीधी ॥ सांभळतां स्वामी तेने, शिक्षा
तो आपी सीधि ॥ तो आचेणा जलजेला, सुनेके
म वेगळी कीधी ॥ पंथ्याणी ॥ ११ ॥ अरजुन सर-
खा लडलाथी, मारगिशर मारा माथो ॥ लेखा-
रो स्वामि मनमां, जेक आणे जलकहलायो ॥
तो आचेणा जलजेला, केम मूकी मुजने लज्जो ॥
पंथ्याणि ॥ १२ ॥ सहदेव सरीखा स्वामि, तमोल
ग नो महिमा जाण्यो ॥ तो केम थजत आज्ञा-
च्यो, ते शाथी रह्यो अजाण्यो ॥ कहोटेक मूकी पाल-
णिया, मननो मनसुजो माण्यो ॥ पंथ्याणि ॥ १३
॥ अही दानव दुःखडां देशे, तेमुजथी केम सेहवाशे
॥ ने लूटकरवा धाये, ते येणा कवडो लशे ॥ आ दा
नव केरू मंहिर जाणुं, कई दिशाथी आवे ॥ पंथ्याणि
॥ १४ ॥ कोडीलारोजे जाणा, त्यां बेशी रूदन करती
॥ स्वामीने मन संभाणी, आं जे आंसु ढाळे
ती ॥ भूली गई भान अते तनजुं ॥ वियोगी वृह-
थी बणती ॥ पंथ्याणि ॥ १५ ॥ ॥ वलण
॥ ॥ बणति वियोगे आणि कृ ॥ साभरे
स्वामीनो साथरे ॥ लगति मनमां लामनी
॥ गोवरधन ना नाथरे ॥ १६ ॥ ॥ इतिश्री

माहा ल्नारथे पांडव्अरिम्ने स्वर्गारोहिणीमध्ये
पंच्याणि विल्नाप वर्णोनाम ल्नेकुन विंशमोऽअ-
ध्याय ॥२०॥ ॥अध्याय २०मो॥ ॥
रागसामेरी॥ ॥मारा होडीला ल्नरथारे
केम मूही मने ज्यां गरे ॥ केम सांल्नरती नथी
नार ॥हार हैया तणारे ॥१॥ मारा होहीला छिन
केम ल्नरीरे ॥ स्वामीत मवीण सुनु लासेरे ॥ज
एमे कुयांथी ज्यापीने भारी ॥ हैत्यनुं भाणियुंरे ॥
२॥ नथी रहेवानी स्वामीज लानरे ॥केमे विसा
री रसीया राल्नरे ॥ मने रोवां केडीधी ताल्नारो-
वा राल्नमारे ॥३॥ मने सल्नाणरी ढोण आवीरे
॥केम कुाण ल्नरी नील्नापीरे ॥ हवे पाल्न्यारुं मुल्नथी
रीसा थी ॥ महाधन मेल्नीन्नेरे ॥४॥ मारुं जीव्युं धी
स्कुल्नेररे ॥ वाहाला महील्ने साध्यां वेररे ॥ थरी
स्वामिजी झाणो केरा ॥ ल्नेरो ले घडीरे ॥५॥ केम व
न महीं तमने गमरीरे ॥ ल्न्यारे नारी तमोने सां
लरसीरे ॥ त्यारे अंतर आपनुं ल्नणरो ॥ कुं थक्रोडन
मणारे ॥६॥ ल्नता संग्रामे सेन्या साथेरे ॥ हरी
आपता मारो हाथरे ॥ हवे अणगी कुरो केम नाथ
॥ त्याली अेकुलारे ॥७॥ कहो केम रह्या छो छानारे
॥ धर्म सम न्यासोभा मुल्नरोा नारे ॥ केम थई गर-
या छेक दिवाना ॥ ल्नणी ल्ने ईन्नेरे ॥८॥ केम वि

सर्यानारीनुंनामरे॥मारा छेल सलुणा रीमरे॥
केम आणस राखो आमा॥घर वरणागीजारे॥८
॥ठालुं रुराखपणुं तम केरुं रे॥तेथी लागे छे दुःख जने
रे॥नथी गमतुं आ द्यानव केरुं॥आवो जोधमां रे॥
९॥मारो तन्म अकारथ थारी रे॥सुकुमाळी जेही
नकेम न्नरीरे॥स्वामि तम वीण केम उचारी॥अ
जणा नारथी रे॥१०॥केम विश्वास आपने आ-
पने आव्यो रे॥केरुं कपटथी संग तन्नव्यो रे॥की
ठगो आठगने ओळाव्यो॥दुरवा कारणे रे॥११
॥मेंथुं तोडी सरोवर पाळ रे॥केम आव्युं अंत मु
ने आज रे॥दीधी दोरी के छिन्न ने गाणा॥पाप ते प्र-
गट्युं रे॥१२॥के में शीवनुं देवालय तोड्युं रे॥वणी
घावतुं आण बछोड्युं रे॥के में डीगतुं नवर मो-
ड्युं॥संत संतापीया रे॥१३॥नमतां विप्रनी पं-
गत आणी रे॥नती गौधेनु पाछी वाळी रे॥के में
लीली आगो आणी॥पूरण पापथी रे॥१४॥केनुं
अंतर डींड्युं आव्युं रे॥केनुं नमतां में लाणुं टाळ्युं रे
॥वणी थातुं सद्व्रत आळ्युं॥आदिन आवियां
रे॥१५॥कीधी आण हत्या थई पापी रे॥पूरी कुप
सरोवर वापी रे॥केनी बीवानी वात उथापी॥कु
अलागणी रे॥१६॥केरुं गोत्र गमन में कीधुं रे॥
केने कपट करी विष दिधुं रे॥दीधी दीकरीने धन-

लीधुं ॥ तन तप आवियां रे ॥ १८ ॥ के में ओणवी थाप
ण छानी रे ॥ शुभ वात प्रगट करी कोनी रे ॥ के में सं
ताप्या तपसी केरानी ॥ मद मनमां लसी रे ॥
१९ ॥ के में सतिमतिने संतापी रे ॥ केने जवणी
रीओ आमण आपी रे ॥ वड पींपण डाणी कापी ॥
तरुवर छेदी आं रे ॥ २० ॥ के में मीत्रनी रोपी तोडी
रे ॥ धणीनीयशुं प्रीति न्हेडी रे ॥ के रेंधावतां घे-
नुं वछेडी ॥ आणावेरी मां रे ॥ २१ ॥ के में मांकुण
जुवडुं मार्युं रे ॥ दुष्ट कर्म मां काम वधार्युं रे ॥ के में
पुन्य करतां आळ्युं ॥ आहिन आवियां रे ॥ २२
॥ के को लिसार्थी पाछो वाळ्यो रे ॥ थातो विवाह
रां कनो आळ्यो रे ॥ दैवे दोष मारा मां रो ला-
ग्यो ॥ दानव हाथे चडी रे ॥ २३ ॥ मारां क्यारनां
प्रगट्यां आ पाप रे ॥ मुने कोना लाग्या हशे आ-
प रे ॥ केम पामुं आधा परितापा ॥ कंथ वियोग थी रे
॥ २४ ॥ मारा लीम समाल डलाथी रे ॥ मारा
सुख दुःख ना छो साथी रे ॥ केम वाल्या रह्या छो
हाथी ॥ आणीआ आपना रे ॥ २५ ॥ मुने दान
वे हेठमां घाली रे ॥ केम मेलीने गवछो व्हाली
रे ॥ करतां ठकुराई केहता वाली ॥ ते केम विसर्यां रे
॥ २६ ॥ पिये पतिनी हुं घुं नारी रे ॥ ते जावे पा
जे थई पर नारी रे ॥ आपो मेणुं मोटुं जेमथा

रीगदाधर होउन्नेरे॥२७॥ ॥धूल्लए॥
॥ ॥मेंएतुं मोटुं मायस्ना॥गदाधर आवो
आन्नेरे॥ गोयरधन्न कहे आयशो॥तोरेहरो
सलीनीजानरे॥२८॥ ॥इतिश्रीमा
हा भारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे भ्रुप
ति वीनापचणोंनाम चिरामोअध्याय॥२०॥
॥ ॥अध्याया॥रीमो॥ ॥राग
मारु॥ ॥वैरीपाये कहे सुणराय॥
त्यारपछीनो कहुं महिमाय॥ नथी भणतां पी
उपसार॥ हरण करी गयो दानवनार॥१॥पां
चे वीर ते आगण गया॥भागीतृषाने ऊभा
रह्या॥ भेयुं लीमसेने पांखुं पाणी॥सति भ्रुप
तीने नवलाणी॥२॥कहे लीमसेन नारीक्यां
गयां॥सघलीधार ऊलां केम रह्यां॥मारी हाक
न बोले नार॥ कीधो ऊच्चार स्वरथे अपार॥
३॥ जेवे सांलज्यु लीमे कहन॥ जीणा रोष्ट
थी भणेवन॥ कीधो सर्वे महिने वीच्यार॥
नीच्चे दानव हरी गयो नार॥४॥धीमो आह
णो वायुनो तन॥प्रगटी ज्याणा पायक ताणे
मन॥ मोटा अंधुरन्न आपो आस॥ हरी आयुं
कुं रीषु जे दास॥५॥ जेक पणमां कुं पाछो आ
वीश॥साथे सतीने लेडी लावीश॥माहुकुष्ट

घानवनेकुमारा॥ लई मुकवुं दुःखथी नारा॥२॥ पछी
बोल्या युधिष्टिर वात॥ तमो सांभळोने मुज भ्रात
॥ कोनी हिंसा नकरवी सार॥ आपणे लेवुं छे हिम
मोवार॥३॥ अल्प यार समुकाम करवुं॥ नथी जस:
त्य हवे आदरवुं॥ माटे नथी लेवुं वीर मारा॥ आकु
सणघणता हरी तारा॥४॥ आवे गरज बोल्यो ध
मुतना॥ केमवहो छो आवुं वचन॥ तेणे सोणी कट
हणकाप्युं॥ केमकायर पणुं तन व्याप्युं॥ बाकु पापी
ने मारे आला॥ मेडी वावटे जाणुं वाला॥ माकु घन-
वने लई ठारा॥ तो कुं कुंतातणो रे कुमारा॥६॥ क्रमक
री याल्यो दैत्यनी दीशा॥ पकोपी लमर थडायांरी
री॥ वारे लीमने धर्म तेवारे॥ त्यारे धर्मने लीम
धिक्कारे॥७॥ नधमान्युं बाल्यो वीर त्यारे॥ धर्मे
मोकल्या निकुलने त्यारे॥ आव्या नगर समीप
नेवारा॥ काळ्यो गरज घांटो तेठारा॥८॥ जेठांमा
णी जे भूपती त्यांया॥ गया वीर जेजंने त्यांय
॥ पियुं रक्षपाणने लाणा॥ लीधां आयुष्य सक
यांजाण॥९॥ कहे केम आव्यो जल त्या आंही
॥ नथी आज्ञा लवाने मांही॥ तव लीमसेन
बोल्यो वाणा॥ लेवा आव्यो तमारा प्राणा॥
॥ जोला जोली मां जेन्यो जे आणी आ॥ दीधा को
अस्त्र लईने उछळी आ॥ लीमे आली लीधा को

नायेणे ए पृथ्वी पछाडी पमाड्या मर्णपोताके
नां शिर अग्नीने कुट्यां ॥ ३ ॥ कोई राक्षसनां माथां
कुट्यां ॥ ३ ॥ ने उसेटी दीधा आकाश ॥ लई पडीया
ते लेइने पर्वत साथे ॥ ४ ॥ कोई अयर नाश थया ॥
आळी घर्णे पछाडे पाया ॥ रो कृष्ण रक्षकने नांख्या
मारी ॥ लीधी माणेथी दीयणी नारी ॥ ५ ॥ आसों-
पी नीकुळने नीरधारा ॥ बेसाखा त्यां गीरी पर सती
नारा ॥ पछी गया ते नग्र मोझारा ॥ सुणी आव्या
त्यां दानव अपारा ॥ ६ ॥ करतारा सिस कुलकार
लारे ॥ आव्यो सांलणी अधिपति त्यारे ॥ रीसे
रक्त थयांछे लोचन ॥ बोल्यो रीसथी मर्भवच
न ॥ ७ ॥ जल्या योरटो छे कुत्ती जारी ॥ नथी
एह तो तुं गति मारी ॥ श्या कारणे आव्यो आंहीं
॥ नकी फडथी लुंदां कुं शीश ॥ ८ ॥ लक्ष्मण अ
बकुता ॥ तो तो मेघनाद नाम मारा ॥ कहे लीमसे
न बोल विचारी ॥ आन अवधि आवीछे तारी
॥ ९ ॥ अेक पणमां पमाडुं पतन ॥ तो कुं पांडुराज
नो तन ॥ अेम कहीने थया तैयारा ॥ पेठा दैत्यनी
सैन्य मोझारा ॥ १० ॥ ले नो ईश्वर राजे टका ॥ नथी
आयुध हाथमां अेक ॥ कोने मुष्टिने कोने लाता ॥
कोनी थापटथी करी घात ॥ ११ ॥ कोने मार्याछे कर से
कडके ॥ कोनां मुख तोड्यां लपडाके ॥ आळीपायपे-

छाडे घणुं ॥ कोने चीरी पमाडे मणुं ॥२४॥ कोने अ-
ही थी छाणे आकरी ॥ थाय मेघनाद बिहारी ॥ सहु
सेन्य विडारयुं त्यां ॥ रह्यो मेघनाद रण मांया ॥
रेपा हतुं वाहन हस्तीनुं जेने ॥ कुटील भीमे ना-
ख्यो घणुं तेने ॥ मेघनादे लीधी दीधी घेटा ॥ आ-
वी कुंता कुंवरनी कोट ॥२५॥ कीधी चोटने कोट छोडा-
वी ॥ वणाड्यो पाछण थी भीम आवी ॥ कट आव्य
दानवना थाणुं ॥ कुरी तीं प्यो पछाड्यो घणुं ॥२६॥
चीरी नाख्यो त्यां भीमे वणी ॥ गयो प्राण तेनो
नीकली ॥ कीधो हवे तहां जयकार ॥ वधाव्या पुष्पे कुं-
ता कुमार ॥२७॥ ॥ वलण ॥ ॥
वधाव्या हवे कुंता कुंवरने ॥ आरीरी से आपी ज-
पा रे ॥ गोवरधन कहे प्राण दैत्य नो ॥ गयो जम
पुर मोझार रे ॥२८॥ ॥ इति श्री माहाला-
रथे पांडव चरित्रे स्वर्गा रोहिणी पर्वे भीमसे-
न मेघनाद युध्ध वर्णनो नाम अष्टुन विंशमो अध्या-
यः ॥२८॥ ॥ अध्याय २९ मो ॥ ॥
राग आसावरी ॥ ॥ कुंता पुत्र त्यां चाल्यो
पुरमां, सेणुं न लागी वार ॥ भीमसेन जाणि जे
वाटे जतां, कीधो मन विचार ॥१॥ दानवनी दारा-
जो सरवे, रहे छे वती जेह ॥ प्रलय थाशे राक्षसनी
पाछी, पीडे प्राणी तेह ॥२॥ माटे तेने संहारीने,

कहे परमारथ कामा ॥ एम कहीने चालीओ ते, नारी
शोधवा ठाम ॥ ७ ॥ वनमां पेठी भीमनी ने, मा
रे मोहुम मार ॥ प्राण लीधा पांडवे कुं ठना, कुठीने
कीधी ठार ॥ ८ ॥ एवुं जोई राक्षसनी नारी, मळी
एकी सर्व ॥ युध्य कर्युं भीमसेननी साथे, जाकी
मनमां गर्व ॥ पा पण तेने परमेश्वर राखे, दानवथी
शुं थाय ॥ मारी स्त्री सैन्या एक क्षणमां, कुरोळछे
जतिकाय ॥ ९ ॥ त्यार पछी द्रुपतिनी पासे, जयाए
या तैयार ॥ आव्या पुरने द्वारे जेह, थयुं विघ्न
तेणे वार ॥ १० ॥ च्यार भूत रहेता ते स्थानक, भीम भी-
डीओ आथी ॥ जेह हाथ झाली जटकाव्यो, भीडने
नेठो माथी ॥ ११ ॥ एरीते त्यां प्रेत मळीने, आव्यो
पहुतन ॥ जटकाव्यो जणीओ जे स्थानक, त्यारे
विचार्युं मन ॥ ज्यारे हैय जा एटलुं थयुं ने, कोणे मुज
ने झाल्यो ॥ शुं विघ्न नडी जावाटे, गज जे कोणे घा
ल्यो ॥ १२ ॥ ऊछळीओ जवनी ऊपरथी, कुंतानो
कुमार ॥ जे करीने हाथ वडे त्यां, पकड्या प्रेत ज्या
र ॥ १३ ॥ हजावीने जणीओ ते तेनी, भूरण कीधी काय
॥ प्रेत चारने साथे लईने, आगळ चाल्यो राया ॥
१४ ॥ ते वेळा त्यां प्रेत भीमने, करगरता अपार
॥ मुको अमने महेर करी तमो धर्म तणा अवतार
॥ १५ ॥ भीमसेन कहे छे कोण तमो छो, कहोने

साथी थता॥ ल्ले लुकुं जोज्या तो पणमां, करुं तमा-
री घात॥१४॥ प्रेत एम कहेवा लाग्यो हुं, मेघनाद
नो तात॥ कुडां कर्म अवगति अे पोहोंच्या आज्ञां मारा
ल्यात॥१५॥ वात सुणीने थरकोहरे, मनमां अेम
विचार्युं॥ रहे जीवता नडी दुष्टो, माटे तेने मारुं॥
१६॥ पण ते पहेलां काम कराव्युं, लागी भूख ने ल्लू-
आ॥ आहार मंगाव्युं मीठा मेवा, तेथी ल्लये हुःआ॥
१७॥ अेम जाणीने प्रेतनी प्रत्ये, कहे छे हुं ताकु मा-
रा मुकुं तमने जीवता ल्ले, लावी आपो आहार॥
१८॥ प्रेत कहे अेक पणमां वीरा, मनमाने ते लावुं॥
मीष्ट लोजन मेवा इत्यादि, अवी आंतनुं आवुं॥
१९॥ लीम कहे अेक पलक महीं ल्ले, नहीं आवो नी
रधार॥ तो जोणी हुनीआमांथी हुं, मारी नांखी
श ठार॥२०॥ छुटा कीधा प्रेत चारने, थया अदुरी
अपार॥ वीध वीधना बैलोग स्नहीं नते, ला-
व्या अमृत आहार॥२१॥ लीमसेनने लूतपाल
ने आव्या निकुण पास॥ सति द्रुपतिने मणी आ
वई, सरव थया हुल्लास॥२२॥ ते स्थानकथी था
ल्या सरवे निकुणने अति क्षाया॥ सति द्रुपति सा
थे आव्यां, ल्यां अेक हता राया॥२३॥ युधिष्ठर
ने पाय नमी वई, निर्मण कुडी नारी गहगहके
अर्जुनने त्यां कीधा नमस्कार॥२४॥ ल्लेरीने लु

गतिथी जईने, भीते आलींघन दीधुं॥ भेवा भीष्ट
लाव्या हता साथे, सर्वे मळीने आप्युं॥ २५॥ प्रेत
के स्वामी ज आमने, रत्न हेतथी आपो॥ तम री
रणे मुस्तक छे मारुं, हुं आवडां सरवे आपो॥ २६॥ ज
तणी आण ऊठ्यो जे पेणा, आव्यां जईने प्रेत॥ पा
य आलीने धरणे पछाड्या, कीधा जय जय प्रेत॥ २७॥
पीरीनां आप्या चरण ग्रहीने, प्रेत वीरने पाय॥ जा
णुं ठरतु कन्नेई भीमनुं, आरस्या धर्म अपार॥ २८॥ ज
रनाई प्रायश्चित केम कीधुं, लवुं हरीने राशण॥ हीम
पंथे जतां आवीयने, केम पमाड्या मरण॥ २९॥ लाली
मकुके सांभळजे त्राता, असुर आवा पेहेरी॥ तो
हरी जनने ने सज्जनने, दुःख अतिरो देरी॥ ३०
॥ ते मारे मोटा बंधु में, प्रेत चार मार्या॥ मेघपु
रजील कीधुं ने, असुर सौ संहार्या॥ ३१॥ ॥
वलण॥ ॥ संहार्या असुर रमे सामटा, मे
घपुरीना सर्वे॥ गोवरधन के तेहनो, मुकाव्यो
अडको गर्व रे॥ ३२॥ ॥ इति श्री माहात्म्यार्थे
पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे भीमसेन प्रेत
संहार नाम द्विविंशो अध्यायः॥ २२॥ ॥

अध्याय॥ २३ मो॥ ॥ राग धन्याश्री
॥ ॥ ऊठ्या त्यां थकी पांचे विरजा॥ पेहेयां
धनकुज सरवे शरीरजा॥ लीधीहीम परपतनी

वाटजी ॥ ऐथे ऊतरे गीरीना घाटजी ॥१॥ मोटुंव
न भयानक तेहजी ॥ लागे भितीने कडके देहजी ॥
त्यांथी आव्याछे भेनन वीसजी ॥ दीठुं नगर ते
ऊत्तर दीशजी ॥२॥ कोट कांगरा नीरना घाटजी
॥ रीतो भावाळा हवेलीना ठाठजी ॥ कहे धर्म थासो
आगरजी ॥ लागी सुधा सरपने अपारजी ॥३॥
जेम करीने गया पुर मांहजी ॥ दीठा वणिक वेपा
री त्यांयजी ॥ ब्राह्मण क्षत्रीने शुद्र अपारजी ॥ कोने
ने धर्म नथी लगारजी ॥४॥ आ नगरमां छे कणि-
नो ठामजी ॥ माटे कळिपुर शेहेरनुं नामजी ॥ सरवे
असत्य जन्या करताजी ॥ कन्या वेचीने धन सं-
घरताजी ॥५॥ कोई थापण छानी ओळवताजी ॥
संत साधुने शिक्षा देताजी ॥ राखे विप्र संगाथे
वेरजी ॥ देता माबापने पुत्र झेरजी ॥६॥ नीवधी
नताने वेची देताजी ॥ नीच जातनी कन्या लेताजी
॥ ब्राह्मण थईने करे कुकर्मजी ॥७॥ कळिकाळमां पोत
ती पक्षजी ॥८॥ रेहेवा परदेशीने नहीं ठामजी ॥
एवुं अधर्मि आप्युं गामजी ॥ कोई कामनी धर्म
न धारेजी ॥ कोई माता आणकुने मारेजी ॥९॥ स
सरो रमे वधु रेंडुं भरजी ॥ गणे नही स्वामीने घ-
र नारजी ॥ जेवो वर्ण ध्यारे नो धर्मजी ॥ नव जाणे को
ईनो मर्मजी ॥१०॥ जेवा नगरमां पांडवस्याजी

जोई पुरने विस्मय थया जी ॥ क्षुधा लागी हती जे
पार जी ॥ त्यारे देखाड्यो सर्वे वीच्यार जी ॥ १० ॥ जेह
विप्रने मंदिर गया जी ॥ कालावाला करी ऊभा रह्या
जी ॥ कहे धर्म तमो महाराज जी ॥ तम सरखुं जमारे
छे काज जी ॥ ११ ॥ करी रसोई जमवुं अमारे जी ॥ माटे
लोचन आव्या तमारे जी ॥ रत्न आपो तो रहीजे
आज जी ॥ नाणी गरीजने करो काज जी ॥ १२ ॥ सुणी
विप्र ते वदतो आव्यो जी ॥ मोटी नेष्टीक जाणी ला-
व्यो जी ॥ तमो नते धुतारा के चोर जी ॥ केम आवीक
रो अहीं सोर जी ॥ १३ ॥ जो अहींथी तमारुं न
थवे जी ॥ नाजो नम सरखा ठग आवे जी ॥ पडे पग
लुं नोगीने तमारुं जी ॥ अन्न जल पाणी सहु मारुं
जी ॥ १४ ॥ माटे नओ तमारे घेर जी ॥ नहीं तो थशे
नाजीरी तमरीशा जी ॥ सुणी पाछा वळ्या पांडुत
न जी ॥ चाल्या पूछया अन्य लोचन जी ॥ १५ ॥ पापे ए
अन्य स्थेण नहीं आव्या जी ॥ दुष्ट वाक्य सुणी पाछा
आव्या जी ॥ लुचे पांडवने नव नेह जी ॥ जो ले मर्म
वचन सहु तेह जी ॥ १६ ॥ कोई कहे साधु स्त्रि सारीला
व्या जी ॥ वेश्याने आरी घेरमां आव्या जी ॥ कोई पु
छे मूल नारी तणुं जी ॥ जेम जन मळ्युं टोणे घणुं जी
॥ १७ ॥ कोई कहे नारी चोरीने लाव्या जी ॥ छुपा रहे
वाने घेरमां आव्या जी ॥ कोई कहे जे चोर छे ला-

रीजी॥ जेम घाकय चोर्हुं अकारीजी॥ घ्टा॥ कोई कहे
जे धुतारा आव्याजी॥ आ नारीनुं हरण करीला-
व्याजी॥ मारे याले शल्ननी पासजी॥ करीजे आ
सर्वयात प्रकारीजी॥ घ॥ जेम कही दोउपा जे यत्न
नजी॥ गया अधिपती ने लोचनजी॥ कोरकणी
छे नाम लूपाणजी॥ कीधो पूरनने नई पोकारजी॥
२॥ स्वामि कोई धूतारा आव्याजी॥ जे कामनी
साथे लाव्याजी॥ पांचे पुरुषने जेंक नारजी॥ मोटी
चोरी ताणा करनारजी॥ ३॥ कहो कुमते रीरनीजे
जी॥ तेने घरनी रीसा॥ स्वामी दीजेजी॥ जेयुं सांल
णी पेडी जो रायजी॥ हता पांनुं पुत्र त्यां आयजी॥
४॥ साथे योध्या लीधा अपारजी॥ कहे मारो ए
चोरने मारजी॥ घेरया पांडव ने कहे नंनेजी॥ नेई
अकणाया धर्म त्यां मंनेजी॥ ५॥ कहे धर्मतने आ
ठामजी॥ आछे अधर्मी लोकनुं गामजी॥ जेम क-
हीने चाल्य पांडु तनजी॥ धाय पाछण पुरना जनजी
॥ ६॥ कोई पाछण पाराण मारेजी॥ कोई धूणता दे
अ ऊरा ठेजी॥ पण आलता नथी ओथीरजी॥ तेणे
सोप्युं हरीने शरीरजी॥ ७॥ सर्व सहन करी बीर
जयजी॥ तेम तेम असुर पुंठण धायजी॥ चाल्यो
लीम ने त्यारे क्रोधजी॥ पाछो करी जो ते पण मांल
घजी॥ ८॥ वारे अर्जुन नेरीने धर्मजी॥ नवक

शो कुंडुं शंर्ग कर्म जी॥ पण मान्युं नहीं कह्युं छे क जी
॥ आवी असुर संहार्या अनेक जी॥ २७॥ तीमे रा
य ने आवी आव्यो जी॥ दई मार ने मण पि माड्यो
जी॥ अक सैन्याना जन संहार्या जी॥ वणी पुरजन
ने अक मार्या जी॥ स्तापुर डील करी फिर चाल्यो
जी॥ तीन आन्धव पासे आव्यो जी॥ पछी सर्वे थ
या तैयार जी॥ तीकण्या हीम जवा ते वार जी॥ २८
॥ पण रहे तो कणी तेठाम जी॥ मोटुं कणिपुर जेनुं
गाम जी॥ चाल्या पांडव जणी पार जी॥ थयो पुठळ
कणि नीरधार जी॥ २९॥ ॥ असे आव्युं जया
नक वन जी॥ चाल्या पांडु तणा पांचे तन जी॥ प
डी नीशां थयुं अंधकार जी॥ रणमां रखडे जे कुंता
कुमार जी॥ ३०॥ लेवरावी कणी जे आडी वार जी
॥ आवे ष्यालतां गीरीना घाट जी॥ मोटां तरुवर त-
न अथडाय जी॥ त्यारे जयकारी शब्द थाय जी॥ ३१
॥ अति पीडाय प्रभुना संत जी॥ नव जडे कोपुरनो
पंथ जी॥ ब्रह्मा युधिष्ठिर वाणी अेम जी॥ अरे वीर आपी
रौद्र केम जी॥ ३२॥ ॥ वलण॥ ॥ केम
धारी वीरा माहरा॥ केवी निपजशे पेर रे॥ गोम्र
धन कहे आपणे॥ जवुं हरीने घेर रे॥ ३३॥ ॥
इति श्री माहात्मारथे पांडव चरित्रे स्वर्गारोहि
णीपर्वे पांडव वन प्रवेशो नाम त्रीविंशो अध्यायः

२३॥ ॥अध्याय॥२४मो॥ ॥

रागबिहाग॥ ॥अरेरे ज्ञाते हवे मुं थ-
शे, आव्या माहावनमांय॥ तरुवर त्यार अढार
छे, सुझे पंथ न त्यांय॥अरेरे ज्ञाते हवे शुं थशे॥
टेक॥१॥श्री हरी केमना सांभणो॥मारा दुःखना
पोकार॥रेन अंधारीमां रडवडे, पांचे पांन्डुकुमार
॥अरेरे॥२॥ माहावन गाजे सिंहमरुं॥त्राडे
वन तणा वाघ॥ अग्निझरे अवनी परे, नागंध
साय साग॥अरेरे॥३॥ साथे सति मारी सुं-
दरी, तेनुं कोमण अंग॥ शोणितवहे छे शरीरथी
थाय काया त्नंग॥अरेरे॥४॥ श्रम करीजे मा-
रग जोणवा, पण थईजे नीरारी॥ अश्रवणपाय
थी चालतां, थाय अजणा ऊधारी॥अररे॥प
॥भुस्तके तरुवर आथडे, वागे कंटक पाय॥ सिंहना
द सजणो करे, सुणी कंपे छे काय॥ अरेरे॥६॥चण
चर चक्र अनगरजकु, काग कोयल मोर॥ मणीघर
नोण शीयाळवां, करे त्नयलीत शोर॥अररे॥७
॥वारे थाय विनतावणी, वागे गेकर केस॥अंधारे
सती आजडाई पडे, भूजजेंयाय केरी॥अरेरे॥८
॥तरुवर ऊंच्या अवनी परे, घड मोटा गंलीरा॥जी-
लीजावण जकु जोरडी, जेर जाजर अंकुर॥अरे
रे॥९॥ शीमणा सहडा ने पींपणा, कौंच कांयकी थोर

॥ आंबा आंबली अति घेघरा, सतावणनेरी
घोर ॥ अरेरे ॥१०॥ नेनी धाके धरा ध्रुजती, पाये
सणकतो रोष ॥ ते नर वनमां रडवडे, धरी लोगीनो
वेष ॥ अरेरे ॥११॥ तणनी पुंठे कणि थयो, करवा स
त्यनुं ताल ॥ ते कणी पांडु पुंठे थयो, कुरे महावने
राय ॥ अरेरे ॥१२॥ गलराया धर्म धीरज तजी,
पुछे विरने वात ॥ शो करशुं उद्यम अहीं, काणी मा
जम रात ॥ अरेरे ॥१३॥ क्षुधा प्रगट थई पापणी
नथी चलातु चर्ण ॥ मारग जोज्यो नव मळे,
अरे अरीरण शर्ण ॥ अरेरे ॥१४॥ आथडतां
अधनी पडे, धणी बेठा थाय ॥ फरे छे आम्भावनमां
साथे सती पणाय ॥ अरेरे ॥१५॥ रजनी वीति
एम दुःखथी, थयो अरुण उद्योत ॥ तीमीर गयुं
अधनी थकी, देखी दीनकर ज्योत ॥ अरेरे ॥१६॥ मा
रग आव्यो नहथिमां, चाल्या आशरे छेश ॥ स
ति संगाथे परवर्‍यां, सहु उत्तर दीश ॥ अरेरे ॥१७
॥ पीडे क्षुधा अति सर्वने, घणा आकला थाय ॥
नण फल सोधवा कारणे, वीर आगण जाय ॥ अरे
रे ॥१८॥ दुःखदयाने कारणे, कीधुं कणि एकाम ॥
त्यां थकी लेइन एकपर, रच्युं विराजगाम ॥
अरेरे ॥१९॥ आगजनाख्यो कारमो, रच्यां क
णकुल अहार ॥ सुंदीर सरोवर लखे लस्युं ॥ रोह

र रोला अपार ॥ अरेरे ॥ २० ॥ वाडीमां प्रसू
अपार छे, दास कहे पीने केण ॥ लंबु सीताफळ जो
रडी, कणीजे मेळव्यो मेण ॥ अरेरे ॥ २१ ॥ कल्पवृ
क्ष आंबा घणा, रामफळ ने अनार ॥ अंजीर दा
म आंबली, रोलानो नही पार ॥ अरेरे आतेंब
॥ २२ ॥ नाळीयर रायण करमदी, खारेक खजुर
॥ पुष्पलताना मांडवा, मेघा लहके लरपुर ॥ अरे
रे ॥ २३ ॥ आव्या जे स्थानक चालता, पांचे पांडु
कुमार ॥ द्रुपदतनया संगछे, शुध्य सति अवतार
॥ अरेरे ॥ २४ ॥ आगळेथी फरी आव्या घणुं, जोयुं स
मीपे शेहेर ॥ निर्मळजळ सरोवर भर्युं, लंका जे
वीछे लेहेर ॥ अरेरे ॥ २५ ॥ ॥ वळण ॥
॥ ॥ लेहेर लगी लंका समी ॥ रोला अ
पर मपार रे ॥ गोवरधन कहे विश्राम करया ॥ अे
कुंताकुमार रे ॥ २६ ॥ ॥ इतिश्री माहात्म्या
रथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे कवि कर
त्रीम शेहेर पांडव प्रवेशो नाम चतुर विंशमो अ
ध्याय ॥ २४ ॥ ॥ अध्याय ॥ २५ मो ॥ ॥
राग आशावरी ॥ ॥ वैशंपायेवाणीब
धातुं, सांभळ कुरु राय ॥ कणीअे आगळ जना
व्यो जेयो, त्यारपछी शुं थाय ॥ १ ॥ धर्म कहे सां
भळजे वीरा, क्षुधा लागी अपार ॥ नजो आ

गामां कृष्ण कूल आव्यो, कुंतीजे आपण अहारा।र
।क्षेण छे रसिक आगतणो अर्थ, पुछो तेनेथी रा।दा-
म आपीने मेघा जायो, डीठो चक्रोदर धीरा।ड।आवी
।णी सुणी चक्रोदर जीठ्या, गया आग मोझार।आ
हीं तहीं लेयुं ते स्थानक, पछी कर्यो पोकार।राक्षेण
छे रसिक आगतणो, तमो आपो भीम मेघा।।स्व
थी लेयुं अमारे कोगर, दाम तमारा देवा।।पो।मत्यु
त्तर नव पाम्यो त्यारे, चाल्यो कुंता तना।।धूणे पो
खरे पोणी लेयुं, पण नहीं मासप अमाडा।।ते स्था
नक ओक तक्षुपदीक, रोला अधिक अंकोरा।।श्रीकृष्ण
ना सरणुं छे भोळुं, दीसे वातुं पोणा।।भा ल्याव थयो
ते कृष्णनो तेने, जेवा मनडु आग्युं।।पण नथी रसिकडो
तेनो, थीतडु पाछु लाग्युं।।दा सोळ मोहोर सोना-
नी तेणे, मुकी पुस्तक नेठरा।।रसिक डाके आगतणो ते,
लेल्ले आ नीरधारा।।ल्ला जेम कही अंतरमां पोते,
लीधां अठकृष्ण सारा।।हाथे मही त्यांथी परवरी आे,
कुंतानो कुमार।।गा।।कवी युग स्नकु कुपर कर्युं छे, रख्यो
आग आ दीरा।।लीमे कृष्णले तोड्यां तेनां, थयां क-
पटथी शीर।।पथ।।कापेलां मुस्तक अनीजा ते कृष्णत-
णां नीरधार।।कुरमां केरा ग्रह्या छे अमणे, पडे कृथीरनी
धार।।रीरे।।नथी अअर ओ लोण।।लीमने, कुंपरनुं
आ।घमा।। अेदलामां कपी मुरूष थईने, पकड्यो वायु

તન ॥૧૩॥ પોકાર કીધો પાપી કણીએ, કો ઘાલ્ને
આ દીઠા ॥ કોઈ પુરૂષે આવી કાપ્યાં, મુજ બાંધવનાં
શીશ ॥૧૪॥ આવો અધિપતિ પુર તણા, પાપીને
શીક્ષા કરવા ॥ ધાવ ધાવ કો રક્ષા કારણ, ખૂનીને સં
હરવા ॥૧૫॥ પોકાર સાંભળી દોડી આવ્યા, પુરના
રાય સમેત ॥ મારો મારો કોઈ કહે છે, કો કહે કરો અ
ચેત ॥૧૬॥ વાત સાંભળી વીર તણી, ગભરાયો કુંતા
તન ॥ વાંક દીઠો પોતાનો, ભણે થાઉં છૂના ॥૧૭
॥ એટલામાં અધિપતીએ આવી, ભીમને બંધન
કીધો ॥ માર મારવા લાગ્યા સરવે, પાછો પુરમાં લીધો
॥૧૮॥ તે વેળાએ ભીમસેનને, ધારણ ન રહ્યું ધીર ॥
બૂમ પાડીને કહેવા લાગ્યો, ચાલ્ને માહારા વીરા ॥૧૯
॥ બૂમ સુણી બાંધવની જ્યારે, મનમાં ચમક્યા રાય
॥ તુરત ઊઠ્યા તે સ્થાનકથી, ભીમ સમીપે ગયા ॥
૨૦॥ જોયા આવતા પાંચે જણને, તુરત બંધન કીધા
॥ ભીમસેન સંગાથે સૌને રાજદ્વારે લીધા ॥૨૧॥
પુરમહીં લઈને ત્યાં રાયે, હુકમ કર્યો નીરધાર ॥ આ
ખટ જણને ગામ બાહાર લઈ, મારી નાખો ઠાર ॥૨૨
॥ અમલ કરી ઊપાડ્યા ત્યાંથી, ચાલ્યા જે ચંડાળ ॥ સં
ગાથે લીધા ખટ જણ જે, કુંતાજીના બાળ ॥૨૩॥
ગામ બાહાર ગયા જે વેળા, થયું સર્વ જલોપારી હે
રબાગ કાંઈ નવ દીઠું, મનમાં પામ્યા ક્ષોભ ॥૨૪

॥ अरे दैव आ रसुं करशे ने, केम नडे आचार ॥ धर्मी
मरण मोहनछे तारी, केम न पामुं पार ॥ २५ ॥ सं
भणावी हती अहर्निशे, पूर्वे नणनी कथा ॥ तेवुं कुःख प
णकुं भोगवुं छुं, आवेणा सर्वथा ॥ २६ ॥ ते स्थानक-
थी आगण चाल्या, कुंताना कुमार ॥ अरण्ये जन
आव्या ते वेणा, महावननी मोझार ॥ २७ ॥ पुर
आनो पकरीने पापी, कणीयुग कुंठण भय ॥ चणीआ
गण एक कूपर कीधुं, सुणजनमेजय राय ॥ २८ ॥ स
दाव्रत मांडयुं सोहंतु, महावननी मांय ॥ कुपे भ
र्ये एक नीरमण जणनो, पांडव आव्या त्यांय ॥
२९ ॥ विप्रवेशेथी कणीयुग बेठो, दीधां आदरमान ॥
रमो जमो रजनी रहो वासो, धर्म तणो मुकाम ॥ ३० ॥
रह्या रात पांडव ते वनमां, सरवे साथुं माण्युं ॥ कणी
तणुं आ कुपट कारमुं, कुंता सुते ना जाण्युं ॥ ३१ ॥
करी रसोईने जुगते जमीयां, आरीशा आदरी दीधी
॥ नरपतीने नारी सरवे, नीरांते निंद्रा कीधी ॥ ३२ ॥
प्रातःकाले जग्यां सरवे, जवा पीयां तैयार ॥ एक ज
मां त्यां कुपटी कणीए, कीधो प्रौढ पोकार ॥ ३३ ॥ धाव
धाव आवेणा कोई, चोर हरीजय धन ॥ कणीयुगे छ
ल्पन करेला, दोडी आव्या जन ॥ ३४ ॥ पकड्या आवी
पांडुतनने, दया माडो मारा ॥ धर्म पासे नव भ
युं कणीए, सत्यतणा अवतार ॥ ३५ ॥ युधीष्टर

ने मालम पडीयुं, नीश्चे कपटी जेह ॥ कुःख देछे ज्या
पणने, मारे हो कुणीना देह ॥ ३९ ॥ कहे धर्म वच्छो
दर प्रत्ये, पड्यो जे नीरधार ॥ दुष्ट कुणी जे नीश्चे
मारे, मारो तेने मार ॥ ३७ ॥ सुणी वात मोराजा
यवनी, तुरत कुणीने लाव्यो ॥ भीमसेनने री
सचडी ते, जोर करीने व्हाव्यो ॥ ३८ ॥ जफ करीने
जणीजे दाब्यो, कुणीजे कर्यो पोकार ॥ मुझे मुजने
पांडु पुत्र, तमो धर्म तणा अवतार ॥ ३५ ॥ हथिनो
ने कुणी करगरे, मुझे मने आ दीरा ॥ युधिष्टर ने करे वि
नती, पाय नमावे शीश ॥ ४० ॥ अवगुण छे जनेक मु-
जमां, पण मोटो गुण जेह ॥ माटे मुझे मुजने स्वामी
कहुं ते गुण विवेक ॥ ४१ ॥ ॥ वलण ॥ ॥
विवेक राखी मन विषे ॥ कहुं छुं गुण विस्तार रे ॥
गोवरधन कहे ते सुणी ॥ छोडी मुझे महाराज रे ॥
४२ ॥ ॥ इति श्री महाभारथे पांडव चरित्रे
स्वर्गारोहिणी पर्वे पांडव प्रत्ये कुणी कपट वर्णोन
म पंच विंशो अध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ अध्याय
२६ मो ॥ ॥ राग मारु ॥ ॥ कहे वै-
शंपायेवचन ॥ तमो सांभणो परिक्षित तन ॥ कु
णी करगरतो अपार ॥ कहे मुझो मने आवार ॥ १
॥ कहे धर्म तुं सांभण वात ॥ गुण अपगुण कहे सा
क्षात ॥ गुण होय जे तुजमां सारा ॥ मुजु कहु जवतो

कुंनी रंधारा ॥ २ ॥ पछी जो न्यो कपी ते हीरा ॥ नाम्यु
धर्मराजने शीश ॥ कहुं छुं परथम अवगुण मारा
पछी गुण वदीश कहुं सार ॥ ३ ॥ कहे विप्रना धर्म त-
जयुं ॥ छोडी संध्या सांतीक कर्युं ॥ सेवरावुं जेटी
नुं धन ॥ करावुं जष्ट सरपेनां मन ॥ ४ ॥ विप्र नीच-
नी चाकरी करे ॥ करी कपट परधन हरे ॥ वेद धर्मने म
ने न जाप ॥ ते युधिष्टर म्हारो प्रताप ॥ पाप स्व-
त्री कायर पाशे सर्व ॥ करे नींदा ने रावे गर्व ॥ करे
नही गौ ब्राह्मणनी वहार ॥ जुंरे विप्रना जणी ल-
डार ॥ ५ ॥ वैश्य जो छुं तोपे तोला ॥ जो जे कपटथी
सकु बोला ॥ वणी जुठुं नामुं मांडे ॥ धन हरवाने क
परी होडे ॥ ६ ॥ अन्न लाणे जन्ने हेरो गाण ॥ जुठां
चडावे जनने आण ॥ रमे चिंतला परधुं जनश ॥
मारे मातापीतानां प्राण ॥ ७ ॥ छोडी पुन्य करे स-
कुपाप ॥ ते तो धर्म छे मारो प्रताप ॥ पुन्य वंताने
पणमां कुपाडुं ॥ करी कपट कुंई कहे आडुं ॥ ८ ॥ अपा
अवगुण मारा जनेक ॥ पण गुण छे मोटो एक ॥
बीज युगमां करे तप ॥ या जेरी व्रत होमे जोगी
काय ॥ ९ ॥ रीत तापवृषा अकु सफेता ॥ पण प्रभु
हरिन नव हेता ॥ जेम आयुष्य चिती जतो ॥ त्या
रे मोस घणे काण पातो ॥ १० ॥ मारा अन्यमां स्वा
मी जे हा ॥ करे अटमास सेवा तेह ॥ जेक चित्त

हरिपरराखे॥ मुजेरामनामगुलजलाजेगीरा
थाय अरमासमां हरीना॥ जयवैकुंठमांतेज
ना॥ मरणजन्मनोफेरो जरी॥ कहि हरीचरणे
चीत्तथासे॥१७॥ जेवोस्वामीछेमारोधर्म॥
कह्यो तम जाणसर्वमर्म॥पीछीधर्म कहे सुण
वात॥कहुं वासकुंतारो साक्षात॥१८॥ताहारे
हरिजनपासे जवुं॥ धर्मकाममां जाडुंनथावुं
॥हरिकथा जनन ज्यांथाय॥ त्यां ताराथी नव रहे
वाय॥१९॥ पापनिंदा थाती होय ज्यांय॥ रहेजेवा
स करीने त्यांय॥ परस्त्रिशुं रमेकोई जर॥वास
करवाने तुज अधिकार॥२०॥कनककामनी छूत
वेहेवार॥ वासकरवाने तुज अधिकार॥ पछी क-
लीचाल्यो करी प्रणाम॥आव्यापांडवतज तेठा-
म॥२१॥आव्या चार जनन जेटले॥ ऋषी सहे
हीत तेटले॥ देख्या मुनीने हरख्या अपार॥ पां
डवे कीधो नमस्कार॥२२॥करी प्रदक्षा पाये ला-
ग्या॥ मुजे आशीषवचन जकुं मागया॥ कीधा
अर्जुने दंडप्रणाम॥ नम्या सहेदेव मुकीमाम॥
२३॥ नम्या निम नकुल ते सर्व॥ भुपति नम्यां
मुकीनेगर्व॥ तेनी कारणथईछे काय॥ घणाकुल्ये
थी करे तपरीआय॥२४॥ मुस्तक उपर जटाजिरा
ने॥पासे तण तुंबु मंडण छाजे॥ ऊग्यो शीर पर

करी निरधार ॥ कीधा उधेवे राज अपार ॥२१॥ हरी
हरी जपे मुख जेह ॥ कोटी कल्पनी करणी हेह ॥
जेवा महा मुनी मनमां लाव्या ॥ करी दर्शन भीन
ते ओलाव्या ॥२२॥ मुनीजे जांजे ऊधा जी त्यारे
॥ उलां अटवण दीठा त्यारे ॥ पूछे मुनी तमो को
ण वन ॥ आव्या राथी आ अघोर वन ॥२३॥
कारणे आ प्रयाण कीधो ॥ केम राज त्यागी वेराग्य ली
धो ॥ क्यां लघुं जनेक पुंछे गाम ॥ तम पीता तणुं
शुं नाम ॥२४॥ ॥ चलण ॥ ॥
नाम शुं पीता तणुं ॥ कहोने सायुं पवनरे ॥ गो
वरधन कहे क्यां थी ॥ महा भयानक वनरे ॥२५
॥ ॥ इतिश्री माहात्मारथे पांडवचरित्रे
स्वर्गारोहिणी पर्वे पांडवो सनत्कुमार ऋषी स्थेण प्रवे
शो नाम षट्‌विंशो अध्यायः ॥२६॥ ॥
अध्याय २७ मो ॥ ॥ राग आशावरी
॥ ॥ वैशंपायन वाणी वदे तुं, सुणजन्मे
जयराय जी ॥ पांडवने सनत्कुमार पुछे छे, त्यार पछी
वैशंपायन जी ॥१॥ पायलागी ने पांडव बोल्या, सां
भळो मुनी वातजी ॥ हस्तीनापुरना पांडुराजा,
तेह अमारा तातजी ॥२॥ कुंता मात हमारां
कहीजे ॥ पुरण पायें त्रातजी ॥ पांडवनाम प्रसि
द्ध हमारु, सिघ्रीनीछे ज्ञातजी ॥३॥ हीमपंथे वे-

कुंभमां नईजे, कपी तणो भय आणीजी ॥३॥ रा
जपाट सहु त्याग कर्युं आ, तपवत मुनीआं भ
णीजी ॥४॥ पांडव जेवुं नाम सांभळी, मुनी क
रण्या अपारजी ॥ पांचे पांडवने सौ मुनीए, की
धा नमस्कारजी ॥५॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाळ तमो
छो, भले पधार्या आजजी ॥ पवित्र कीधो आश्रम
मारो, दर्शन दई महाराजजी ॥६॥ प्रसिद्ध कीर्ति
जगत विषे छे, पांडु पुत्र तमारीजी ॥ धर्म तणा अव
तार तमे छो, वैकुंठना अधिकारीजी ॥७॥ आज
भारथ तम चरित्र केवुं, तेछे अमारी साथजी ॥
तेथी जाणीए सर्व पराक्रम, दूर जननी वा-
तजी ॥८॥ तम थता पहेलुं जे थएलुं, ऋषीए
जागण लाग्युंजी ॥ तम चरित्रनी वात वर्णवी,
ते आश्रम पासे राख्युंजी ॥९॥ नथी अजाण्यां कार्य
तमारां, सौओ जाणे वातजी ॥ प्रसिद्ध छो सौ
जक्त विषे, तम कीर्ति पूर्ण विख्यातजी ॥१०॥ सां
भळी एवुं वद्या युधिष्ठिर, धन्य भाग्य अमारां
जी ॥ सफळ थयो आ जन्म अमारो, दर्शन करी त
मारांजी ॥११॥ पण कहो मुनी संदेह मनमां, कया
रनुं तप आदरीउंजी ॥ क्यारथी आ स्थळ वास
कर्योने, क्यारनुं तन आ धरीयुंजी ॥१२॥ हरीने
बोल्या मुनी धर्मराजुं, ठीक पुछ्यो प्रश्न आजजी ॥

कहुं विस्तारी तमने विरा, सुधरे सरवे काजजी ॥१३॥
त्रण कल्पथी हेठ घस्यो जा, सप्तऋषी नीरधारजी ॥
तपस्या आदरी छे ते दीननी, आ स्थळ वनमोझा
रजी ॥१४॥ वळी कहे धर्म सांभळो स्वामी, कल्पते शुं
कहेवायजी ॥ केटला वर्षनो कल्प हशे ते, मनमां संदेह
थायजी ॥१५॥ कहे मुनी तमे सांभळो महिमा, कल्प
तणो कहुं तेहजी ॥ विस्तारी विगत संभळावुं, मनमां
राखो तेहजी ॥१६॥ मास जाय एक मनुष्यनो, त्यारे
पीत्रीनो दिन थायजी ॥ पीत्री तणुं एक वर्ष थाय त्या
रे, देवनो दीन कहेवायजी ॥१७॥ मुनी कहे सांभळजे
पांडव, चोकडीनो विस्तारजी ॥ सत्ययुग त्रेताने द्वाप
र, कळी ए युग छे चारजी ॥१८॥ लक्ष तेताळीश बी
श सहस्त्र, एटलां वर्ष ज्यारे जायजी ॥ चार युग वामे
ते वेळा, एक चोकडी थायजी ॥१९॥ एवी चोकडी ईकोते
र, करे, ईन्द्र अमर पर राजजी ॥ चौद ईन्द्र एवी रीते मरे
त्यारे, विधि दीन एक उद्यातजी ॥२०॥ एवी रीते ब्र
ह्माना दिवसमां, चौद ईन्द्र बदलायजी ॥ रात्रीमां पण
चौद ईन्द्र जाय, दीनकर उद्योत थायजी ॥२१॥ ब्रह्मानी
ज्यारे रात्री हवी त्यारे, सर्व जगत नाश पामेजी ॥
सूर्य चंद्र ग्रहणने अग्नि, पर्वत पहाड विरामेजी ॥२
॥ ते वेळा प्रागवड ने पत्रे, आद्यनिरंजन पहोडेजी ॥ छंद
वडे स्तुति मारकंड करता, गई प्रभुनी नीडेजी ॥२३॥

जे रीते ब्रह्मानो दिवस जेह, त्रण शत साठ विशे
ष जी ॥ वर्ष थाय ब्रह्मानुं त्यारे, सांभळो धर्म नरेश
जी ॥ २४ ॥ जेवां शत वर्ष ब्रह्मा जीवे, सो विधि जाइ
जायजी ॥ त्यारे विष्णुनी पण कहेवी, जे रीते वर्ष
थायजी ॥ २५ ॥ जेवा सो वर्ष विष्णु जीवे, शत वि
ष्णु जाहजायजी ॥ त्यारे श्री शंकरनी शाख, एक
घडी कहेवायजी ॥ २६ ॥ जेवी रीते वर्ष थाय छे शी
वनुं, दश सहस्र वर्ष जीवेजी ॥ शक्ति तणी पण
थाय छे वीरा, सांभळजो सौ जेवेजी ॥ २७ ॥ जेवां
शत वर्ष शक्ति जीवे त्यारे, महाकल्प जेह कहेवाय-
जी ॥ जेवा त्रण कल्प थया जमोने, जाण छे जा
णायजी ॥ २८ ॥ जेवा चौद कल्प थाशे त्यारे, मुनी
मारकंड मरशेजी ॥ मुनी मारकंड जेह जरी, लोमश
षीनुं रोम ऊतरशेजी ॥ २९ ॥ जेवा ऋषी रोम सौ था
य त्यारे, पींछ.जगदालवनुं खरेजी ॥ जेवा जग
दालव शहस्र थाय त्यारे, मुनी लुशांड मरेजी ॥ ३०
॥ जेवुं प्रमाण छे कल्प तणुं, तमो सांभळो पांडु
कुमारजी ॥ प्रयाग भग वृत तप ऊद्यापन, करीजे
अमो आहारजी ॥ ३१ ॥ ॥ वलण ॥ ॥
तप वृत करीजे आस्थणे ॥ सेवा हरीनी सारे
॥ गोवरधन कहे ऋषी वदे ॥ जेम सांभळे पांडु कुमा
र ॥ ३२ ॥ ॥ इतिश्री महाभारथे पांडव

इति श्री स्वर्गारोहिणी पर्वे सप्तऋषी पांडव प्रत्युत्त
रवार्त्ता नाम सप्तविंशोऽध्यायः॥२७॥ ॥
अध्याय॥२८ मो॥ ॥राग मारु॥ ॥
वैरी पाये कुंड चालताय॥ तुं तो सांभलने कुंरुराय॥
कीधुं कल्प तणुं त्यां प्रमाण॥ राजधर्मने ऋषी जे
जाणपीर॥ सुणी धर्म त्यां करम्या अपार॥ स्वामि
सकुण थयो अवतार॥ थया पवित्र श्रवण मार॥ सुन
णी शास्त्र कथा गुण धार॥१॥ पछी नमीया त्यां जि
टजणपाय॥ लई आज्ञाने आगळ जया॥ दीधी दि
षीजे जडी आशीश॥ भणजे माधव तमने जे
दीश॥२॥ चाली स्नेहनी आंख मां धार॥ कुशी थि
या त्यां कुंता कुमार॥ आव्या पंदर जोजन तेह॥ म
हाभक्त प्रभुना जेह॥३॥ आव्युं शोभितुं वनत्रे
ह सार॥ भर्युं सरोवर जळ अपार॥ पाण उपर तरु
नी हार॥ जेनी शोभा तणो नही पार॥४॥ आवी ते
स्थेण ऊभा रह्या॥ जळ पीवा समीपे गया॥ जेटले
थई गर्जना घोर॥ सांभळ्यो सरवे व्याघ्रनो सोर॥
५॥ जळ पान करे छे जेटले॥ व्याघ्र गरजीने आव्यो
तेटले॥ मुख मोटुं भयंकर रूप॥ भई व्याघ्रने यम
स्या रूप॥६॥ तव भीमने चडीयो क्रोध॥ लई आ
वननापर जोध॥ करी ऊंचे पछाड्यो ज्यारे॥ थयो व्या
घ्रनो गांधर्व त्यारे॥७॥ भई विस्मय थया पांडु

तना॥ क्यांथी व्याघ्रनो प्रगट्यो तन॥ पछी पुछी ते
वीरने वात॥ केम थई तुज गांधर्व जात॥ ९॥ पछी
बोल्यो गांधर्व जोडी हाथ॥ तमो सांभलजो मुज
नाथ॥ करता हुं चारी॥ तप जे कुधारा॥ व्याघ्र थई-
ने डराव्या ते वारा॥ १०॥ पछी आप मुनी जे दीधो॥
मारो व्याघ्रनो देह जे कीधो॥ हालावाला कीधा में जई
॥ स्वामी मुक जे मारी थई॥ ११॥ व्याघ्र वेरी क्यारे
जदलारी॥ मारी गतीरी पेरे थारी॥ त्यारे दुर्वीरे
बोल्या वचन॥ तुं तो सांभलण गांधर्व जन॥ १२॥
पांडव हिमाणे जावशे ज्यारे॥ जीम पकडी पछा
डी त्यारे॥ ते वेणा थईश मानव जन॥ त्यां सुधी
रहे व्याघ्रनुं तन॥ १३॥ आप लई जाव्यो सरोवर
पास॥ पाणी मनमां महा उदास॥ जाणी दुःखवि
डारचुं मारुं॥ थाज्ने कल्याण पांडव तमारुं॥ १४॥
जेम कही गयो नीज आवास॥ पूरी अमर इंद्रनी
पास॥ कही इंद्रने सघणी जे वात॥ जय हिमपं
थे पांचे भ्रात॥ १५॥ धर्म नीकुळ शहदेव साथाव
णी अर्जुन तम कुमार॥ अंगे धर्यां छे वनकुलवस्त्र
॥ नथी हाथमां कोईने शस्त्र॥ १६॥ वेरी जोगीनो
अरवण पाय॥ साथे भूपति होमण काय॥ सुणी
उठ्या इंद्र ततखेव॥ लीधा संगमां कोटिक देव॥
१७॥ पुष्पक वैमान लीधुं छे साथ॥ आव्यो पांडव

पासे अमरनाथ॥ पांडवे लेया इंद्रने त्यारे॥१७॥
ई पाये पड्या सर्व त्यारे॥१८॥ भणी परस्पर ऊ-
ल्लारह्या॥ वेरी अनेई इंद्र गलराया॥ कहे पुत्र तुंप
मे छे दुःख॥ चाल स्वर्गनुं आपु सुख॥१९॥ कच्च
राज्य पुरी अमरानुं॥ रूडुं छे काम हिमाणे तेवानुं॥
धर्म नीकुण संदेह सार॥ आपुं ऊत्तम कुं अधि
कार॥२०॥ माटे चालोने साथे मारी॥ थाशे पुरण
आरि तमारी॥ तव जोलिया अर्जुन वात॥ तात
सामे लेईने हाथ॥२१॥ पीता शुं करुं राज्यने लेई
आप्या सुख सकु मुकी देई॥ अक हरि तणुं छे काम
॥ अवुं अमारे वैकुंठ धाम॥२२॥ तेनो नाश थाये कोई
वार॥ नथी करवाना ते अंगिकार॥ राज्य लोग ने
ईच्छता नथी॥ तुच्छ सुख छे अ सर्वथी॥२३॥
माटे हरी शरणे अमो ल्लरीं॥ कोटी कल्प त्यां सुखी
या थाशुं॥ पछे इन्द्र गयो आकाश॥ गया हिमाणे
हरिना दास॥२४॥ ॥वळण॥ ॥चा-
ल्या हरिजन हेतथी॥ मुख जपता श्रीराम रे॥ गोव
र्धन कुह अरले॥ आव्यो राक्षसकुरो ठाम रे॥२५॥
॥ ॥इतिश्री महाभारथे पांडवचरित्रे स्वर्गा
रोहिणी पर्वे गांधर्वश्राप निवारण इन्द्रपांडव संवा
दो नाम अष्ट विंशो अध्यायः॥२८॥ ॥

अध्याय॥२९मो॥ ॥राग आशावरी

॥ ॥ આવ્યા પાંડવ ગામ તજી તે, અઘોર ઘ-
ન મોઝાર ॥ હિમાળાનું દ્વાર હતું ત્યાં, રેહેતા રા-
ક્ષસ ચાર ॥૧॥ તે રાક્ષસને ભેઈને, પાંડવને ઊપ-
ન્યો ત્રાસ ॥ એટલામાં તે રાક્ષસ ચારે ॥ આવ્યા પાં-
ડવ પાસ ॥૨॥ કહે દૈત્ય કેમ આવ્યા આ સ્થળ ॥ અહ્યાં
ભયંછે ભાઈરે ॥ કારણથી વેરાધર્યો, ત્યાગીનો
તે કહો ગાઈ ॥૩॥ યુધિષ્ટર વાણી એમ બોલ્યા,
સાંભળો દાનવ જન ॥ હિમાળે ભયંછે વિરા, તેથી
આવ્યા વન ॥૪॥ દાનવ કહે સાંભળ ભે માનવ, ક-
રો યુદ્ધ અમ સાથ ॥ જીતી અમને ભવ હીમાળે,
નહિ તો વળો પશ્ચાત ॥૫॥ નહી ભવા દૈએ કો ભક્ત
ને ॥ એવો અમારો ટેક ॥ માટે કરવો સત્ય થકી, સં-
ગ્રામ રાખી વિવેક ॥૬॥ ભીમસેને હાકી યુદ્ધની
ઊઠ્યા બંન્યો વિર ॥ મહામલ્લ માતંગ સરિખા,
પ્રૌઢ દિસે શરીર ॥૭॥ ભીમસેનને રાક્ષસ સરવે
કરે મહાસંગ્રામ ॥ સામા સામી ગાત્ર પછાડે, મા-
હાબલ મુકે મામ ॥૮॥ જે રીતે સંગ્રામ થયો ત્યાં,
દારૂણ દિવસ ચાર ॥ ભીમસેને રાક્ષસ સરવેનો,
કીધો ત્યાં સંહાર ॥૯॥ થયા ધર્મ ખુશી તે વેળા, ક-
હે ભીમને વાત ॥ તમ વિના આ સંકટમાંથી, કે-
ણ ઊગારે ભ્રાત ॥૧૦॥ એમ કહીને આગળ ચાલ્યા
કુંતાના કુમાર ॥ આવ્યું સ્થાનક પંચદેવનું, ગંગા

त्रठ निरधारा ॥११॥ ते स्थानकमां आवीने सरवे, क
र्युं गंगामां स्नान ॥ पंचदेवनी पूजा करीने, संतोष्या
भगवान ॥१२॥ ते स्थानकथी हिमाळापर, चढवा
लाग्या सर्व ॥ हरी समरण करी भक्त कहेछे, मुनी
मननो गर्व ॥१३॥ चढे गीरीने ऊंडे ऊतरे, विकट
मारग जेह ॥ वनभेर व्याघ्र वसे जहु वनमां, का
यर कंपे देह ॥१४॥ भाणे नीशा सम तीमीर रहेछे,
जेवां भयानक झाड ॥ शीळा कांकरा कंटक वागे,
प्रौढ भासता पहाड ॥१५॥ जे रीते अति दुःख वे
ठता, पांडव चाल्या भया ॥ त्राण भेनन पर गया जे
दले, गळी सतिनी काय ॥१६॥ द्रुपद तनया गळी
पड्यां भेई, थया ऊदास अपार ॥ करवा मांड्युं रुदन
सरवे, आंखे आंसु धार ॥१७॥ गद्गद कंठ धर्म थया
त्यां, वाध्यो चित्तनो शोक ॥ अरे दैव आवुं थई कही,
मुकी धर्मे पोक ॥१८॥ अलबेला जे नारी पियारी,
ताम दर्शन नापामी ॥ भाग्यहीण अभाणा जे
मारी, अधवचमां विरामी ॥१९॥ जे रीते जहु रुदन
करीयुं, शोके कीधुं स्नान ॥ चाल्या त्यांथी आगळ सर
वे, ध्यान धरी भगवान ॥२०॥ भीमसेन तव कहे ध-
र्मने, कहोने वीरा वात ॥ शा कारणथी अधवचमां
जे, नारीनी थई घात ॥२१॥ युधिष्ठिर तव वाणी बो
ल्या, कहुं छुं वीरा जेह ॥ शा कारणथी सति भणी थई,

घात वारता जेहां॥२२॥ पांच पति जे पत्निके
रा, नहीं अन्य अविशेष॥ पण अर्जुन उपर ते
धरती, प्रीति नार विशेष॥२३॥ तेना दोष थकी जे
नारी, हरी दर्शन नव पामी॥ हीमाळानी अधव-
चमां ते, पाप थकी विरामी॥२४॥ ते स्थानकथी
वीरा, जोजन पर, आव्या पांडु तन॥ ते स्थानकमां
निकुळ केरू, तुरत गळि गयुं तन॥२५॥ जोई वीर
सो रुदन करता, अरे दैव शुं थयुं॥ त्रण वारमां निकुळ
केरू, गात्र गळी रे गयुं॥२६॥ आंखे आंसु वहे स-
र्वने, प्रगट्यो शोक अपार॥ करे सर्व कल्पांत अति-
शे, महावननी मोझार॥२७॥ करी स्नान ने आगळ
चाल्या, पुछ्युं भीमे तेवार॥ कहो भाई शा कारणथी
पड्या, निकुळ अहीं निरधार॥२८॥ धर्म कहे सांभ-
ळने वीरा, कहुं छुं साची वात॥ कह्युं मानतो नहीं ते
माटे, तेथी थई आ घात॥२९॥ अेम कहीने आगळ
चाल्या, चतुर ते महावीर॥ पंदर जोजन आव्या
त्यारे, गळ्युं सहदेव शरीर॥३०॥ रुदन करता पांडु
व सरवे, नाहीं थया तैयार॥ भीमसेने त्यां पुछ्युं
भाईना, मरण तणी नीरधार॥३१॥ धर्म कहे सांभ
ळने वीरा, जेरी मोटा अेहा बात सहु आगळथी
जाणे, पण ना कहे संदेहा॥३२॥ दूत रम्याने धर्मपति
हार्या, पण ते वात न कीधी॥ ते कारणथी सहदेव

ने रीखे ज्ञाया जहीं तज्ञ दीधी ॥३३॥ ओम करतां ह रो नेन न आव्या, विपरीत थई छे वात ॥ अर्जुन गा त्र गणी पड्युं, गुणवंतानी थई घात ॥३४॥ महा रू पांत करे धर्म राज, नीम रहे लेवा रे ॥ मरण थयुं मुज शूरा विरनुं, तेथी दुःख रुं धारे ॥३५॥ स्नान करीने आगण च्याल्या, पुछी नीमे पेरा रे ॥ कारणथी अर्जु न पडीयो, शुं छे हरीने ओरा ॥३६॥ युधिष्टर तव वाणी वद्या ओ शूर विर महासुजाण ॥ कुरुक्षेत्र मां योध्ध विडा र्या, मारी मोटां आण ॥३७॥ ते पापेथी अर्जुन पडी या, सांभळ विरा वात ॥ ओम करी पंथे नेजन आव्या त्यां थई नीमनी घात ॥३८॥ गणी गयुं नीम गात्र समुद्र, डोलत्यो सागर रोष ॥ अरे दैव कुं रल्यो जेरु ल्लो, पड्या दुःजना थोक ॥३९॥ ॥ वलण ॥ ॥ व्याप्युं दुःख अथाग विजन, रही ओ कुली जतरे ॥ शोध्य धन कहे माग त्याग्ये, गुणवंतानी घात रे ॥४०॥ ॥ इतिश्री महाभारते पांडवचरित्रे स्वर्गा रोहिणी पर्वे हीमाले पांडव गळीत वर्णनो नाम अनु नत्रिंशमो अध्याय ॥ ३९ ॥ ॥ अध्याय ३० मो ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ ॥ वैशंपायन त्यां ओ च्या वचन ॥ सांभळ परिक्षित रायना तनज ॥ नी मसेन नुं गात्र त्यां गणीयुं ज ॥ दीठो धर्मे रुदन करु ज रीयुं ज ॥१॥ करी स्नान च्याल्या तेणी वार ज ॥ आव्युं

सरोवर शीतलीतुं सारजी॥ घोरगुफातउपर अपार
जी॥ नवनवानी लग्या लगारजी॥२॥ तव वीमासे
मनमां राय जी॥ केम करी वैकुंठमां न वाय जी॥ नवलान
सतो दिनकर त्यांय जी॥ लागे रजनी सदाय छे त्यां-
य जी॥३॥ अेवो विकट हिमाळो पहाड जी॥ मोटा गी
री तणा छे कराड जी॥ जेठा सरोवर पाणे राय जी॥
युधिष्टर अति मन अकुळाय जी॥४॥ अरे प्रभु कुं
क्यां थकी आवुं जी॥ करी दर्शन सुखी जो थावुं जी॥ कर-
ता उदारी मनथी अपार जी॥ जेठा सरोवर त्रठ नीर
धार जी॥ पाथ युं अंतर लमीने लाग जी॥ प्रेर्यो
नारद धर्म प्रमाण जी॥ आव्या नारदने धर्मराय जी॥
लेई पांडव मन हरखाय जी॥५॥ कीधो पीताने प्र
णाम जी॥ मळ्या नारदने तेह ठाम जी॥ कहे धर्मराय
तुने धन्य जी॥ जेरो युधिष्टर मुज तन जी॥६॥ तें तो
कीर्त्ति वधारी छे मारी जी॥ थ्या जे वैकुंठना अधिकारी
जी॥ जेम करीने आनता थया जी॥ लई वैकुंठ ऊलार
ल्या जी॥७॥ सुण्या युधिष्टरने धर्मे त्यांय जी॥ गया
वीज पूरीनी मांय जी॥ नारद पण गया नीज अवा
से जी॥ युधिष्टर गया प्रभुनी पासे जी॥ त्यारे शंख चक्र
गदा पद्म धार जी॥ जेठा कोटी भुवन करतार जी॥ स
लई पाये नमाव्युं शीश जी॥ कीधां दर्शन श्री जगदी-
श जी॥८॥ कहे केशव रायने धन्य जी॥ जेरो धर्मत

णो तुं तन जी॥ मोटा मुनी जेह छे त्यां मन जी॥ नथी
दुष्ट को वैकुंठ मांय जी॥११॥ जेवा भक्तने नमी या पा
य जी॥ करी स्तुति नेरीझव्या राय जी॥ शोभा वैकुंठ-
नी छे अपार जी॥ स्फटिक मणिना स्थंभ विशाळ-
जी॥१२॥ भींत कनक सरीखी दीधी जी॥ हारे चिंता
मणी जडी दीधी जी॥ जेथी शोभा कही न वळ्य जी॥
तेह कह्युं युधिष्टर राय जी॥१३॥ पछी पांडव आव्या
स्वामी पास जी॥ कहे श्रीपतिने ते प्रकारे जी॥ स्वामी
जेह छे अमारी जी॥ कहुं आज्ञा ने होय तमा
री जी॥१४॥ पछी बोल्या त्यां शामशरीर जी॥ कहो
सुणो युधिष्टर विर जी॥ कहे धर्म सुणो महाराज जी॥
मुने देखाडो कौरव राज जी॥ पापी विर वडो छे दुर्योधन
जी॥ माटे करवां छे तेनां दरीसन जी॥१५॥ मने तेथी जे
छे सुख लाई जी॥ नथी वेगळी एकमे स्नाई जी॥१६
॥ माटे लेया छे तेमने आज जी॥ करी कृपा देखाडो मह-
राज जी॥ सुख विर थार अमे नार जी॥ ते दरीवो मु
ने लुगदा धार जी॥१७॥ आव्यो हरीजे त्यां रायनो
हाथ जी॥ आव्या रायरणछोड संगाथ जी॥ जेह वैकु
ठमां विर थार जी॥ देखाड्यां साथे भूपति नार जी॥१८
॥ सुख सागरमां नित्य नाय जी॥ तेह कह्युं यु-
धीष्टर राय जी॥ त्यांथी चाल्या हरी नीरधार जी॥ग
या नमपुरनी मोझार जी॥१९॥ देखाड्या रातकौरवने

त्यांयजी ॥ पड्या नरक कुंडनी मांयजी ॥ भोगवे दुःख
अपरंपारजी ॥ करे कष्ट तणा ते पोकारजी ॥ २० ॥ की
॥ कौरवे धर्मने न्यारेजी ॥ कहेवा लाग्यो दुर्योधन त्या
रेजी ॥ न्याइ करगरी कहीजे तमनेजी ॥ नरक दुःखथी
छोडावो हमनेजी ॥ २१ ॥ करे कल्पांत सर्वे भ्रातजी
॥ सांभळो धर्म अमारी वातजी ॥ आवी दया युधी
ष्टरने मंनजी ॥ कह्युं करगरी भुगजीवनजी ॥ २२ ॥ की-
धो हरीओ हुकम तेणीवारजी ॥ काढ्या कौरव सर
घने बहारजी ॥ जेवा घटे तेवा नीरधारजी ॥ आप्या
रीत भ्रातने अवतारजी ॥ २३ ॥ ॥ वलण
॥ ॥ आप्या अवतार धृतराष्ट्र तनने ॥
सुणजो श्रोताजनरे ॥ धर्म हरि शरणे रह्या ॥ कु
हछे गोवरधनरे ॥ २४ ॥ ॥ इतिश्री महाभा
रथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे वैकुंठे धर्म प्रवे
शो कौरव दुःख नीवारण नाम त्रीशमो अध्यायः ॥
३० ॥ ॥ अध्याय ॥ ३१ मो ॥ ॥
राग आशावरी ॥ ॥ अवतार आप्यो कौ
रवने त्यां, मृत्युलोक मोझार ॥ युधिष्टरने भ्रात
च्यार, रह्या वैकुंठमां नीरधार ॥ १ ॥ सति द्रुपति सा
थे छे, कंइ नथी कोइने दुःख ॥ भक्ति करे प्रभु धरनी
पोते, सदा भोगवे सुख ॥ २ ॥ वैकुंठनां सुख भो-
गवतां, बहु दिन वही गया त्यारे ॥ सुलभा कुंता

ने जोत्रा, वैकुंठे जाव्यां त्यारे ॥३॥ परीक्षितने च्या
ण डस्यो, तेपण हरी शरणे जाय ॥ पीता मातने
देखीने, त्यां नम्या परिक्षत राया ॥४॥ हवे हस्ति-
ना पुरमां, राज जन्मेजय महाराज ॥ धर्म शास्त्र
प्रमाणे पोते, सुखे चलावे राज ॥ पाप जेहार ब्रह्म
हत्या जो थई छे, जन्मेजयने माथे ॥ शरीर सघळु
शाम थयुं छे, दुःख सहे सहु साथे ॥५॥ वैशंपाय
ऋषीने तेडी, कह्यो सर्व प्रकार ॥ ब्रह्म हत्या जो जा
गी मुजने, वात कहो विस्तार ॥६॥ वैशंपायक हे सु
ण राजन, हराउ पर्वनी वात ॥ सांभळजे तम पू
र्वज केरी, टळे दोष साक्षात ॥८॥ वैशंपाये कहे वा
रता, सुणे जन्मेजय राया ॥ टळ्यो दोष सहु देहथे
की, कंचन सरखी थई काय ॥९॥ जेह हत्या रेहे-
ती हती ते, लाग च्यार त्यां कीधा ॥ च्यार जणने थ
ाउ लागते, मुनीजे वहेंची दीधा ॥१०॥ जेरीते
हत्या जो टाळी, कथा सांभळी कर्ण ॥ शाम हतुं श
रीर थयुं ते, कंचन सरखुं वर्ण ॥११॥ करी तपस्या ज-
न्मेजय ते, गया स्वर्ग मोझार ॥ नारद जोगी आव्या
तेना, वृध्ध पितानी रुधार ॥१२॥ युधिष्टर कहे जन्मे
जय कहो, प्रश्न तणो वृतांत ॥ सुणी दुःखी के सत्य
असत्य कही, लागो मननी भ्रांत ॥१३॥ जन्मेज
य तव पाय नमीने, पद्याधर्मनी साथ ॥ प्रश्नपि:

ताथई दुष्ट आपणी, शुं कहुं तेनी वात ॥ २३ ॥ अ
सत्य अन्याय थयो अतिशे, मनमां धार्यो गर्व ॥
हत्या वेरथी धन संघरता, लुंटुं वेद छे सर्व ॥ २४ ॥ पा
म लेच्छ आवी वस्या पुरमां, धर्म डुबाव्यो ताज
॥ चोरी जारी वधी शेहेरमां, माठां कर्म महाराजा
२५ ॥ सुणी मन उदासी थया, माहा धर्म सांभळी
वात ॥ कह्युं हतुं श्रीकृष्णे मुजने, कळी आव्यो सा
क्षात ॥ २६ ॥ वैकुंठमां हरी भक्ति करता, पांडु कुळ
नीरधार ॥ पुन्यवंता पांडव छे सर्वे, शीवजीनो अ
वतार ॥ २७ ॥ सत्यवादी पांडवनी प्रित्ये, कथा सांभ
ळे तेह ॥ ब्रह्म हत्यादिक पातिक भरी, मोक्ष पाम
शे तेह ॥ २८ ॥ श्री दामोदर त्रुठे तेने, थाय सफळ स
हु काज ॥ माहा भारथनो महिमा अेवो, सहाय
थशे महाराज ॥ २९ ॥ व्याधी रोग मटे तेनाथी,
निरमळ थाये तन ॥ वंझा नारी पुत्र पामशे, नि
रधन पामे धन ॥ ३० ॥ स्वर्गारोहिणी सुणे स्ने
हथी, पापी पावन थाय ॥ मन इच्छीत फळ माग्यां
मळशे, अेवो छे महिमाय ॥ ३१ ॥ हरीकथा पर हेत
राखीने, पुन्य दान बहु करवुं ॥ निंद्या नव करवी को
ननी, ध्यान हरीनुं धरवुं ॥ ३२ ॥ पांडु पुत्रनां प्रौ
ढ पराक्रम, वर्णव्यां तेमां चरित्र ॥ वैशंपायन ज
न्मेजयने, कीधुं परम पवित्र ॥ ३३ ॥ जे संस्कृत

કૃપા સમજીને, સાર વલોવી લીધું ॥ ગૂજરાતી
ભાષામાં જાણી, મેં કવિતા બંધ કીધું ॥ ૨૪ ॥ મા
ટે આપણ ખોડ હોય તો, કરજો મુજને ક્ષમાય ॥
સર્વ કવિનો કિંકર કહું છું, પુજું પ્રેમે પાય ॥ ૨૫ ॥ ગુણ
ભર્યા ગૂજરાતની મધ્યે, ભરુંચ મુજ ગામ ॥ રૂપ
ડવંજને ડાકોર વચ્ચે, છે આ નાનું ગામ ॥ ૨૬ ॥
ગોવરધન છે નામ મારું, ત્રવાડી મેવાડ જ્ઞાત ॥
ભટ અટક પ્રખ્યાત મારી, સહારામ મુજ તાત ॥
૨૭ ॥ ગ્રંથ રચ્યામાં ચૂક હોય તો, કરજો કવિજન મા
ફ ॥ અલ્પ બુદ્ધિથી રચ્યો ગ્રંથ આ, નાનકડો જ
સરાફ ॥ ૨૮ ॥ વ્યાકરણનો કુંભેદ ન સમજું, ન જા
ણું પિંગળ પાઠ ॥ નથી શીખ્યો ગ્રંથ ગુરુજે, કા-
વ્ય તણા કાંઈ ઠાઠ ॥ ૨૯ ॥ તે માટે વિનતી ક-
રી કહું છું, ગોવરધન તમ દાસ ॥ સાર લેઈ શ્રી
કાર … કરો આ, પુસ્તક રાજી પાસ ॥ ૩૦ ॥ સોમ
નાથ શંકર છે મોટા, ઈષ્ટદેવ મુજ એહ ॥ વળી
આરાસો જયિનારીનો, સર્વે સમર્પ્યો દેહ ॥ ૩૧
॥ રામક્ષેત્રમાં સ્નાન કર્યાથી, નિર્મળ થાયે ગા
ત્ર ॥ વ્યાધી રોગ મટે તેનાથી, રામ પ્રસાદી પાત્ર
॥ ૩૨ ॥ શ્રી રઘુવીરને ચરણે નામું, કરું વિનતિ ક
રજોડ ॥ ગોવરધન કહે બોલો સર્વે, જયજય શ્રી ર-
ણછોડ ॥ ૩૩ ॥ ॥ પદ લખ્યા ॥ ॥

श्री रणछोड वदो सहु मुखथी ॥ बोलो राम
एक वार रे ॥ गोवरधन कहे सीतापति ॥ आ-
त्माना आधार रे ॥ ७४ ॥ ॥ इति श्री
माहात्मार्थे पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे
ग्रंथ समाप्त वर्णनो नाम एक त्रिंशमो अध्यायः
॥ ३१ ॥ छ छ छ छ

समाप्त